Mehta ... 77

श्रीः ।

श्रीमती महारानी भारतेश्वरी

विक्टोरिया का चरित्र.

जिसको

"श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" के संपादक
मेहता पं० लज्जारामजी शर्मासे
निर्मितकराय,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५८, सन् १९०१ ई०



श्रीमती भारतेश्वरी महारानी विक्टोरिया।
जन्म १८१९. मृत्यु १९०१.

भूमिका।

श्रीमती महारानी भारतेश्वरी विक्टोरिया महोदया वास्तवमें महाशया थीं। उनका प्रजापर पूर्ण प्रेमथा और प्रजा उन्हें अन्तःकरणसे चाहती थी। वह प्रजाके सुख दुःखको अपना सुख दुःख समझती थीं और समय २ पर अपने सद्गुणोंसे प्रजा के चित्त में सद्गुणों को स्थान देने का प्रयत्न किया करती थी। उनके ६३ वर्ष के शासन में ब्रिटिश जातिने धन, विद्या, बल और उद्योग में असाधारण उन्नति की थी और राज्य की वृद्धि होते २ उसे यह उपमा दीजाने लगी कि "महारानीके राज्य में कभी सूर्य का अस्त नहीं होता है"। वह दया की मूर्त्ति थीं और इसीसे भारतवासी उनका मातासे बढ़कर आदर करते थे। यूरोप, एमेरिका और एसिया खंड के राजा और प्रजा की उनपर पूर्ण पूज्यबुद्धि थी और जिन २ राज्यों की इंग्लैंडसे पीढियों से शत्रुता चली आती है वे भी महारानी की प्रशंसा करते थे। राज्यप्रबंध का उचित संशोधन, दया का संचार और प्रजापालन के सिवाय उनकी पतिभक्ति अप्रतिमथी और उनका सच्चरित्र भारत वर्ष की उन सती रमणियों के समान था जिनका नाम स्मरण करने से हमें विशेष आनन्द होताहै। वह ईसाई धर्मपर जैसे दृढ आस्था रखती थीं उसी तरह भिन्न २ देश की जुदे २ धर्म मानने वाली प्रजा को अपने २ धर्म के अनुसार चलते हुए देखकर उन्हें अधिक हर्ष होता था। राज्य प्रबंधका अपने ऊपर भारी बोझा होनेपर भी वह अपने बालकों के आचरण सुधारने और उन्हें योग्य शिक्षा दिलाने में कभी त्रुटि नहीं करती थीं। और इन्हीं कारणों से भारतवासी उन्हें देवी की उपमा दिया करतेहैं। ऐसी दयामयी महारानी का विस्तृत चरित्र हिन्दी भाषा में अबतक कोई न था और इस कारण यह इस विषय की प्रथम पुस्तकहै। मुझे आशाहै कि, जो महाशय इसे ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे उन्हें अपूर्व आनन्द होगा। सज्जनों के चरित्रों से जितनी शिक्षा मिलना संभवहै वह इस में विद्यमानहै। इसमें श्रीमतीके चरित्र के अतिरिक्त इनके शासनकाल में ब्रिटिश

राज्य और भारतवर्षमें जो २ विशेष घटनायें हुई उनका भी इसमें समावेश कियागया है । उनमें से कईएक घटनायें ऐसी हैं जो अभीतक पूर्ण रूपपर हिन्दी जानने वालोंके दृष्टिगोचर नहीं हुई थीं । भाषा इसकी जहांतक होसका सरल की गई है और मुझे आशा है कि इससे पाठकोंको उपन्यास और इतिहास पढ़ने का संयुक्त आनन्द होगा ॥

महारानी जैसी राजर्षि की उपमा पानेवाली महाशया का चरित्र और साही उनके शासनकी मुख्य २ घटनाओंका संग्रह कर उन्हें यथा स्थान रखने में मुझे कहांतक सफलता हुई है इसका उल्लेख करना मेरा काम नहीं है। प्रथम तो मैं हिन्दी का सुलेखक नहीं, दूसरे विलायत से हज़ारों कोस रहकर एक भारत वासी को ऐसा कार्य संपादन करने में बड़ी कठिनता पडसकतीहै, तीसरे यह कार्य अधिक काल में होनेका था किन्तु मुझे इसके लिये बहुत थोड़ा अवकाश मिलसकाथा । ऐसीदशामें जो कुछ मुझसे बनसका उसीपर संतोष कर आज यह पोथी हिन्दीरसिकों के समक्ष रखताहूं । इससे पहले जिन पुस्तकों की मैंने रचना की है उनका पाठकोंने आदर कियाहै इसीकारण इस वृहत्कार्य के करनेका मुझे साहस हुआहै ॥

मैंने इस पुस्तक को चार भागोंमें बांटा है । प्रथम में श्रीमतीका चरित्र, दूसरे मे श्रीमतीके शासन कालकी विशेष घटनायें, तीसरे में ब्रिटिश राज्य और भारत वर्षकी उनके समयमें जो कुछ उन्नति वा परिवर्तन हुआ उसका दिग्दर्शन और चौथेमें श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड का चरित्रहै । इनके अतिरिक्त इसमें महारानी का वंशवृक्ष और पुस्तक की शोभा बढानेके लिये २७ सुंदर दर्शनीय चित्रभी लगाये गये हैं ॥

उपन्यासों की रचना और अन्य भाषाकी पुस्तकों के अनुवाद की अपेक्षा इतिहास और चरित्र लिखने का काम कठिन होताहै । उपन्यास लिखनेमें रचयिता की लेखनी जितनी स्वतंत्र होतीहै उतनी इनमें नहीं होतीहै। इसकारण संभवहै कि बहुत ध्यानपूर्वक लिखने पर भी इसमें कोई त्रुटि रहगईहो । इसके सिवाय समयकी संकीर्णतासे जो त्रुटियां रहसकती हैं उनका संकेत मैं ऊपर करचुकाहूं इसीकारण इसमें कहीं२ अशुद्धियां रहगई हैं इसी लिये पुस्तक के अंतमें शुद्धिपत्र लगाया गयाहै ॥

इस पुस्तककी रचना करनेमें "गुजराती" के संपादक मिस्टर इच्छाराम सूर्यराम देसाई, मिसेज़ ओ. एफ़ वाल्टन, मिसेज़ पुतली बाई डी. एच. वडिया, मिस्टर एल बेलेंटाइन, मिस्टर जी बार्नेट स्मिथ, मिस पुतली बाई जहांगीर काबराजी रचित चरित्रों, 'इन मिमोरी आफ विक्टोरिया (अवर ग्रेश्यस क्वीन) आदि पुस्तकों और "टाइम्स ऑफ इंडिया, पायोनियर, एडवोकेट आफ इंडिया, अमृतबाजार पत्रिका, मुम्बईसमाचार, गुजराती, केसरी" आदि देशी और (जेंटलवोमेन) आदिविलायती समाचार पत्रों और भारतवर्षके इतिहासोंसे आश्रय लिया गयाहै और इस बात के लिये मैं उन सबको धन्यवाद देताहूं। मेरा विशेष धन्यवाद श्रीवेंकटेश्वर समाचार और यन्त्रालय के स्वामी श्रीयुत सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी के लियेहै जिन्होंने मुझ जैसे अल्पज्ञ मनुष्यका आदरकर इसपुस्तकको बनवानेका काम सौंपा और इसे छापकर प्रकाशित किया। उन्हींका इस पुस्तकपर सब प्रकार का स्वत्व है। अंत में मैं अलीगढ़ निवासी पंडित गंगाशंकरजी पचौली (नागर) को भी धन्यबाद देताहूं जिन्हों ने श्रीमती महारानी विक्टोरियाकी सायन और निरयण जन्मकुण्डली लिखकर इसमें प्रकाशित करनेके लिये भेजी॥

यदि इस पुस्तकका हिन्दी रसिकोंमें आदर होगा तो मैं अपनेको कृत कृत्य समझूंगा॥

खेतवाड़ी—बंबई. ता० २५ सितम्बर सन् १९०१ ई० वामनद्वादशी सं० १९५८.	हिन्दीका लघुसेवक— **महता—लज्जारामशर्मा,** (बूंदीनिवासी.)

साम दान भेद दंड नीतिमैं निपुणनृप,
अरिदलदलबेको भये समरत्थ हैं ।
संधि अरु विग्रहके विग्रहसे रणराजैं,
जाँके बल देखि भाजैं वीर अतिरत्थ हैं ॥
ऐसे जो भये तो कहा प्रजापोष कीने बिन,
राजनकी राजनीति धूरमैं धसत्थहैं ।
धन्य महारानी विकटोरियाके गुणनमैं,
प्रजापोष गुण जिमि अंगनमैं मत्थ हैं ॥ ४ ॥
कवितासराहिबेको कविजनवृन्द भन्यो,
वनितासराहिबेको कामिमति मोटी है ।
शूरनसराहिबेको समर सयानैं भन्यो,
मित्रनसराहिबेको विपतिनकोटी है ॥
महारानी विकटोरियाको गुनगन भलो,
भन्यो तो प्रमान कहा मोरी बुद्धि छोटीहै ।
राजनकी राजनीति रीतिकेसराहिबेको,
रावरंकप्रजाबानी सुन्दर कसोटी है ॥ ५ ॥
मित्रनसराहे गुनगन ना सराहे जात,
शत्रुनसराहे तामैं भ्रमकी न ठौर है ।
निजप्रजाभेट पाये नृपकी अधिकता का,
परप्रजाभेट मिले जानो नृपमौर है ॥
निजप्रजारक्षक सो कौन ना नृपनमाहिं,
परप्रजारक्षक सो नाहिं ठौर ठौर है ।
एते गुन महारानी विकटोरियामें जाकी,
कोटिन निवाजिबेको लोचनकी कोरहै ॥ ६ ॥
ऐसी गुनगनखानी महारानी जगजानी,
सम्वत तिरेसठलौं प्रजापाल करकै ।
पुस्तनके वैरमेट पूज्य ह्वैकै लैलै भेट,

निजपरधरमको दृढ जग करकै ॥
सतिनकी मतिनको पतिनमें दृढकर,
भारतभवनन मैं भूरिभोग भरकै ।
दृगन चुराय हाय प्रजाको विहाय रानी,
देवलोकशोकहरिबेको गई फिरकै ॥ ७ ॥

पण्डित–नन्दलालजी शास्त्रिरचित.



श्रीः ।

श्रीमती महारानी विक्टोरिया चरित्रकी-

अनुक्रमणिका।

अध्याय. विषय. पृष्ठांक.

(प्रथम भाग)

(दूसरा भाग)

श्रीमतीके शासनकी मुख्य घटनायें.

(तीसरा भाग)

श्रीमतीके शासनमें ब्रिटिश साम्राज्यकी उन्नति।

(चौथा भाग)

श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्डका चरित्र।

इति।

श्रीमती महारानी विक्टोरियाके चरित्रके चित्रोंकी-अनुक्रमणिका।

इति।

॥ श्रीः ॥

श्रीमती महारानी विक्टोरियाका चरित्र।

पहिला भाग।

अध्याय १.

इंग्लैंड और महारानीके माता पिता।

इंग्लैंडके इतिहासमें केवल दोही राज्य सर्वोत्तम मानेजाते हैं। इन दोनों राज्योंने साधारण स्थितिसे परिवर्तन कर इंग्लैंडको भूमण्डलका एक देदीप्यमान ग्रह बनाया है। रानी एलिजाबेथ और महारानी विक्टोरियाके शासनमें इस राज्यकी अप्रतिम उन्नति देखकर यह कहा जासकता है कि इस इंग्लैंडका प्रारब्ध स्त्री राज्यकर्त्रीके समयमें अधिक चमकता है रानी एलिजाबेथके शासनमें शेक्सपिअर स्पेन्सर बेकन और बटले जैसे नररत्नोंके उत्पन्न होनेसे इस राज्यकी कीर्त्तिका डंका यूरोपभरमें बाजना आरंभ हुआ था वही कीर्त्ति महारानी विक्टोरियाके शासनमें भूमण्डलमें उत्कृष्ट रूपकर व्याप्त हो रही है॥

हेस्टिंगसके युद्धमें नार्मंडीके ड्यूक विलियमके इंग्लैंडका जय किये बाद केवल छः राजाही महारानीके वयको पहुँचे थे। इंग्लैंडके इतिहासमें केवल दूसरा ज्यार्जही एक राजा हुआ था जिसका वय महारानीसे अधिक था। शेष श्रीमतीसे कम उमरमें मृत्युको प्राप्त हुए और उन्होंने श्रीमतीसे थोडेही वर्ष राज्य किया।

महारानीके पिता ड्यूक आफ् केंट ।



महारानीके पितामह राजा तीसरे ज्यार्ज स्वभावमें बड़े कठोरथे। अपने पुत्रोंके साथ बहुत कड़ाईका बर्ताव करते थे । इनके तीन पुत्र थे । एक राजा चतुर्थ ज्यार्ज, दूसरे राजा चतुर्थ विलियम और तीसरे महारानीके पिता केंटके ड्यूक एडवर्ड । पिताकी कठोरतासे ड्यूक आफ् केंटको युवावस्थामें बड़ी तंगी भोगनी पड़ी थी । पिता तृतीय ज्यार्ज इनके पद और प्रतिष्ठाके योग्य इन्हें द्रव्य नहीं देते थे । इस कारण इन्हें ऋण लेना पड़ा था । महारानीके पिता प्रसिद्ध सैनिक थे । इंग्लैंडकी सेनामें इनकी बड़ी प्रतिष्ठा और दबदबा था । यह स्वभावके सादे और स्वच्छ थे और यद्यपि इनके पिता इनसे अप्रसन्न थे परंतु वहांकी प्रजाका उनपर बड़ा विश्वास था और इसीकारण सेनामें इनको बड़े २ पद दिये गये थे ॥

अनेक युद्धोंमें वीरता दिखाकर जब इनका वय बुढ़ापेके निकट पहुँचा तब इन्होंने विवाह करनेकी इच्छाकी । इनकी स्त्री कोई प्रसिद्ध सुंदरी न थी किन्तु जर्मनी

महारानीकी माता विक्टोरिया मेरी लुइज़ा ।



के एक छोटे गाँवकी रहनेवाली विधवा राजकुमारी विक्टोरिया मेरी लुईज़ा थी । इनका बालवयमें एक बूढे राजवंशी लिनिंजनके राजपुत्र एमिलासे विवाह होगया था। प्रथम विवाहसे इनको दो संतति थीं । दोनों बालकोंकी शिक्षा दीक्षा पर इनका विशेष ध्यान देखकर राजकुमारीकी नम्रता, सहनशीलता, बुद्धि और सद्गुणोंपर ड्यूक आफ् केंट मोहित होगये । परस्परके कोर्टशिपके अनंतर राजकुमारी इनसे प्रसन्न तो हुई परंतु रुपयेकी तंगीने इस भावी जोड़ेके संयोगमें बाधा डाली। प्रथम पतिने मरते समय जो अपनी विधवाके लिये पाँचहजार पौंडका वार्षिक नियत कर दिया था उसमें शर्त यह थी कि, यदि कुमारी दूसरा विवाह करले तो यह वार्षिक बन्द कर दिया जाय । इधर ड्यूक आफ् केंटके पास पैसेकी संकीर्णता और उधर विवाह करलेनेसे, अपनी प्राणप्यारीका पांचहजार पौंडकी वार्षिक आय बंद होजाना । ये दोनोंही बातें इस प्रेमबद्ध जोड़ी की इच्छा पूर्ण न करनेका कारण हुई । बिचारे दोनों अपना मन मारकर चुप होगये ॥

परंतु इंग्लैंडके राजा तृतीय ज्यार्जके बड़े पुत्र चतुर्थ ज्यार्जकी कन्या शार्लेट संतान बिना मरगई और इसकारण वहांकी प्रजाको गादीके वारिसके विषयमें चिन्ता होनेलगी । प्रजाके अनुरोधसे कठोर पिताने राजकुमार एडवर्डके विवाहके लिये छः हजार पौंडका वार्षिक वेतन नियत किया। इस कार्यसे इस भावी जोड़ीके मुरझाये हुए मन फिर लहलहाने लगे । सन् १८१८ के मई मासकी १९ वीं तारीख़को सैक्सकोबर्गके राजा लियोपोल्ड की बहन राजकुमारी विक्टोरिया मेरी लुइज़ा अनेक मासकी उत्कंठा और वियोगके पश्चात् अपने प्रिय और इच्छित पति केंटके ड्यूक एडवर्डकी सहधर्मिणी हुई । इनका विवाह जर्मनीमें हुआथा और विदेशमें विवाह होने और बाहरही संतान उत्पन्न होनेसे उस बालकका गादीपर स्वत्व नहीं रहता है । इस प्राचीन नियमके अनुसार ये वर वधू इंग्लैंड बुलायेगये । वहां आनेपर इंग्लैंडकी राजरीतिके अनुसार इनका फिर विवाह हुआ । परंतु इंग्लैंडमें रहकर अपने पद और प्रतिष्ठाके अनुसार खर्च करनेकी इनमें शक्ति नथी इसलिये लाचार होकर ड्यूकको अपनी प्रियपत्नी सहित फिर जर्मनीमें निवास करना पड़ा । यह स्थान ड्यूक आफ् केंटकी नववधू डचेज् के पूर्वपतिका एम्बोर बेल नामक ग्राममें एक महल था यहीं डचेज् ने गर्भधारण किया । वरवधूका हर्ष गर्भके साथ ही बढ़ने लगा । इंग्लैंडकी प्रजाको अपने भविष्यत् के राजाके जन्मधारण करनेकी आशा हुई । गर्भप्राप्तिसे सातवें मासमें ड्यूक अपनी प्रियवधूको लेकर इंग्लैंड आये । इनको अपनी भावी संततिके लिये इतना प्रेम और उत्साह था कि, वह एम्बोर बेलके महलसे केस्टिंगटन प्रासादतक अपनेही हाथसे गाड़ी हांकते हुए आये ॥

अध्याय २.

महारानीका जन्म ।

अप्रेल मासभर लंडनमें सुखपूर्वक निवास करनेके अनन्तर मईकी २४ तारीखको सन् १८१९की वसंत ऋतुके शुभ मुहूर्तमें ड्यूक आफ् रोसेक्स, ड्यूक आफ् वेलिंगटन, आर्चबिशप आफ् कैंटन बरी (इग्लैंडके प्रधानपादरी) लार्ड लैंसडाउन और ज्यार्ज केनिंग् के समक्ष दयामयी विक्टोरियाका जन्म हुआ ॥

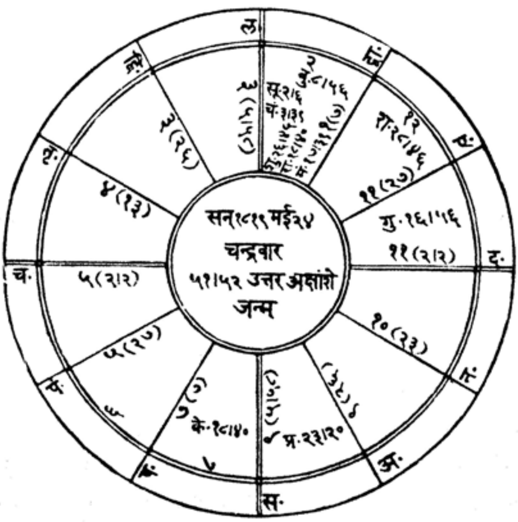
इनका जन्म ४ बजकर १५ मिनटपर हुआ था । उन दिनोंमें लंडनमें सूर्योदय ३ बजकर ६९ मिनटपर होताथा । लंडनके उत्तर अक्षांश ५१।३२ हैं ।

जन्मकालके सायन ग्रह और लग्न ।

र०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०	प्र०	लग्न	दशम.
२	२	०	१	१०	०	११	०	५	८	२	१०
२	३	१७	८	१६	२६	२८	१८	१८	२३	५	०
६	३९	३९	५६	५६	४५	४६	४०	४०	२०व	५८	२

इनमेंसे अयनांश २२ अथवा १८ घटाने से निरयण कुंडली बनजातीहै । निरयण पंचांगके अनुसार उस दिन ज्येष्ठ शुक्ल १ सोमवार संवत् १८७६ था ।

+ सायन जन्मलग्न ।

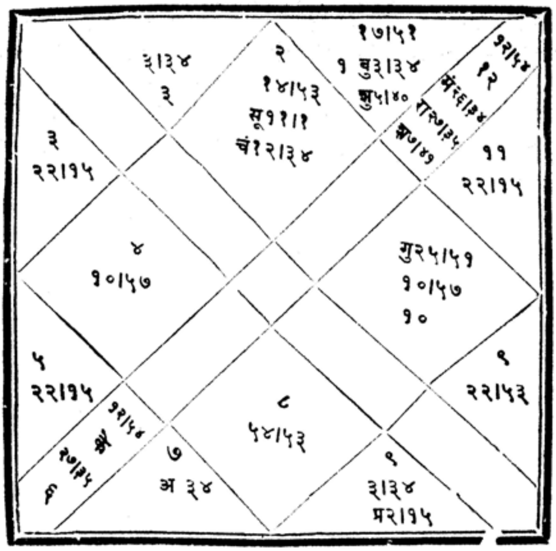


---

१ "केसरी" मराठी साप्ताहिक समाचार पत्र तारीख १९ जनवरी १९०१

+ पचौली गंगाशंकरजी लिखित ।

× निरयन जन्मलग्न.



ठीक एक मास के अनंतर २४ जून को महारानी को बापतिस्मा दियागया। विक्टोरियाका जन्म मई मासमें हुआथा । इंग्लैंडमें यह मास बड़े आनन्द और स्वास्थ्यका समझा जाता है इसीलिये इनके माता पिताने इनका नाम "मे फ्लावर" अर्थात् मईका पुष्प रक्खा । सबही बालकों के वास्तविक नाम और और प्यार के और होते हैं । विक्टोरियाका "मे फ्लावर" नाम लाडका था किन्तु बापतिस्मा देते समय इनका नाम " एलेक्ज़ेंड्रिना विक्टोरिया" रक्खा गया । इनके पिता-का विचार यह था कि, अपनी प्यारी पुत्रीका नाम एलिजाबेथ रक्खाजावै क्योंकि इंग्लैंड की प्रजा को यह नाम बहुत प्रिय है । बापतिस्मा देने वाले केंटरबरीके प्रधान पादरीने इनका नाम "एलेक्ज़ेंड्रिना" नियत किया । बालिकाके पिताके अधिक अनुरोधसे इस नामके साथ महारानीकी माताका नाम विक्टोरिया और जोड़ा गया। इस कारण श्रीमतीका पूरा नाम "एलेक्ज़ेंड्रिना विक्टोरिया" हुआ ।

जिस समय श्रीमती तीन मासकी हुई उनके अगस्त महीनेमें डाक्टर जेनर-ने सीतलाका टीका लगाया । इंग्लैंडके राजघरानेमें टीका लगानेका यह प्रथम अवसर था ।

× पचौली गंगाशंकरजी लिखित ।

अध्याय ३.

बालवय ।

जब श्रीमतीका बय छः मासका हुआ उनकी माता उन्हें लेकर डिवोन शा-यर परगनेके सिड मौथ स्थानमें चलीगई । वहांपर एकदिन यह बालिका दाई-की गोदीमें खेलरहींथीं इतनेहींमें अकस्मात् कमरेकी एक खिड़कीका किवाँड़ तोड़ कर सनसनाती हुई एक गोली इनके शिरपर पहुंची । श्रीमतीके शासनमें प्रजाका बहुत कुछ उपकार करना भगवान्को अभीष्ट था इसलिये ईश्वरने गोलीसे बालिका की रक्षाकी ॥

डचेज् आफ् केंटने अपनी प्यारी बेटीको अपने स्तन पिलाकर पालाथा । वह कभी इनकी रक्षाका भार नौकरोंपर नहीं छोड़तीथी । सदा अपनेही पास रखती और मिताहार, सत्यभाषण और नम्रता शिखानेपर बहुत ध्यान देती थी । वह जा-नतीथी कि, नौकरोंके भरोसे रहनेमें लड़की चिड़चिड़ी होजायगी इसलिये वह अपनी पुत्रीको खिलाने पहनानेका काम अपने हाथसे करती थी ॥

दोनों माता पिता विक्टोरिया पर अत्यंत प्रेम रखते थे । एक बार माताने अपने किसी मित्रको लिखाथा कि, मेरी पुत्री डेवनशायर की स्वच्छ पवन में गुलाब की तरह खिलरही है । वह दिन दिन दृढ और स्वस्थ होती जाती है । इसके चन्द्रकला के समान बढ़नेसे कितनेही लोगोंके हृदयमें कांटासा चुभता है । " ये कितनेही लोग" इस बालिकाके ताऊ ज्यार्ज थे । महारानीके पति एडवर्डने अपने सदाचार और सद्व्यवहारसे प्रजाके मन जीतलिये थे । राजकु-मार एडवर्ड की प्रियपत्नी डचेजूका भी प्रजा बडा आदर करती थी । जिस स-मय वह प्यारी बालिका को लेकर बाहर निकलती थी प्रजा "हुर्रे" के पुकारसे अपना हर्ष प्रकट किया करती थी ॥

पिता ड्यूक आफ् केंट एकांत वास अधिक चाहता था । दुर्भाग्यने उसके सुखके दिनोंको शीघ्रही समाप्त करदिया । बालिका एक वर्षकी भी न होनेपाई थी इतनेहीमें अकस्मात् मेह बरसा । वृष्टि में महारानी के पिताके कपड़े भीगकर सराबोर होगये । मार्गमें उनको अपनी प्यारी पुत्री दिखाई दी । पुत्री वात्स-ल्यने पिताको अधीर करदिया । पिता पुत्रीके आमोद प्रमोद में भीगे कपड़े बदलना भूलगये । उस समयकी शर्दी ऐसी बैठी कि, थोड़ेही दिनमें ड्यूक आफ् केंट अपनी प्राणप्यारी और 'मईके पुष्पको ' छोडकर चल बसे । इंग्लैंडमें बड़ा शोक हुआ । ड्यूक आफ् केंट के सद्गुणोंपर लक्ष्य देकर प्रजाने उनको "प्रजाप्रिय ड्यूक" की उपाधि दी ॥

अब बालिका विक्टोरियाकी रक्षाका भार केवल मातापर पड़ा। पतिवियोग से परमदुःखित होकर डचेज् सिडमौथसे लंडनआई। उसीदिन (२९ जनवरी को) अपने पुत्रकी मृत्युके सातवें दिन इंग्लैंड का राजा तृतीय जार्ज अकस्मात् मृत्युवश हुआ। चौथा जार्ज राजा हुआ। राजसिंहासनपर विराजकर राजाने भ्रातृवधूका प्रबोध किया। डचेज्ने बालिका विक्टोरिया पितृव्य की गोदमें रखकर आर्तनादके साथ आसूं भरी आँखोंसे कहा अब "इस लड़कीके पिता आपहैं"॥ माताने पतिमरण के पश्चात् घरसे बाहर निकलना बन्द करदिया। गवर्नमेंटने भी डचेज्से ऐसाही करनेका अनुरोध किया॥

२१ जुलाई सन् १८२० को एक व्यक्ति महारानी की मातासे मिलने गया था। उससे डचेज्ने कहा कि "इस बालिका के जन्मसे थोड़ेही मासके अनन्तर इस अज्ञान देशमें मैं पतिविहीन और यह पिता बिना होगई। यहां कोई हमारा मित्र भी न रहा। मुझको अँगरेजी भाषाका अच्छी तरह बोध नहीं है। समय बड़ा टेढ़ा है परंतु मुझे इन बातों की कुछ पर्वाह नहीं है। मैंने सब कामोंको तिलांजुलि देकर इस लड़की को उत्तम शिक्षा देनेका बोझा अपने ऊपर लिया है"। बाळवयसेही इनकी माता इन्हें एक साधारण बालिका की तरह घरके काम काज शिखाने लगीं। ठेठसेही सादे भोजनकी टेव डाली। केन्सिंगटनके राजभवनमें सादगीके सिवाय किसी प्रकार का आडंबर न रक्खा गया। उस समय महारानीकी सहेलियोंमें इनकी बहन (डचेज्के प्रथम पतिकी कन्या) फियोडोरी रहा करतीथीं॥

बालिका विक्टोरियाको पुष्पोंपर बड़ी प्रीति थी। वह केन्सिगटन राजप्रासादकी खिड़कियोंके गमलोंको अपने हाथसे सींचा करती थीं। विक्टोरियाके बालवयमें इंग्लैंडका बाजार आजकलकी तरह खिलौनोंसे भराहुआ नहीं था। वह घरके खेल खेलनेके अतिरिक्त अपने गधेपर चढ़कर केन्सिंगटनके बागमें फिरा करती थीं और जब कभी उनका जी उकताता वह बुड्ढे यहूदी सर मोसेस मोंटीफ्योरके बगीचेमें आकर विश्राम लेती थीं॥

कुमारीकी चौथी वर्षगांठपर राजा चतुर्थ ज्यार्जने इनको अपना चित्र भेंट किया था। वह राजकुमारी के साथ बड़ा प्रेम रखतेथे और कभी २ इन्हें दावत दियाकरते थे। इनका हास्यवदन और चित्ताकर्षक सौंदर्य देखकर इन्हें सबही लोग खेल खिलाया करतेथे। इनपर लोगों का अधिक प्रेम देखकर इन्हें बड़ा आश्चर्य होता और यह कहतीं कि, मुझसे लोगोंका इतना प्रेम क्योंहै?

छः वर्षकी बालिका विक्टोरिया ।



मेरी बहन फियोडोरी को क्यों नहीं खिलाते हैं । एक बार यह गाडीमें बैठकर फिरने जातीं थीं । गाड़ीके एक छोटा टट्टू जुता हुआ था । एक बालक गाड़ी हांकताथा । अकस्मात् एक कुत्ता टट्टूके पैरोंमें आकर चिपटगया । टट्टू चौंका और बालिका विक्टोरिया सहित गाड़ी उलटगई । संयोगवश एक सैनिक जिसका नाम प्राइवेट मेलोनी था उस जगह उपस्थित था । उसने गिरतेही इनको उठालिया और इस कारण बालिका कुचलनेसे बचगई ॥

राजकुमारीकी माताने इनको मितव्ययताकी भलीप्रकार शिक्षा दी थी । एक दिन बालिका खिलौने खरीदने के लिये बाजार में गई थीं । वहां जाकर उन्होंने अपने सब भाइयों और बहनोंके लिये खिलौने मौल लिये । चलते २ उन को एक बालककी याद आगई उन्होंने उसके लिये दूकानदार से एक पेटी मांगी । महारानीके साथमें जो आया था उसने कहा कि, अब पैसे चुकगये हैं पेटी लेने के पैसे नहीं रहे हैं महारानी सुनकर चुप होगई । दूकानदारने विनयपूर्वक कहा कि, मैं आपको यह पेटी भेंट करता हूँ परंतु महारानीने ऐसे अवसरपर उसकी भेंट स्वीकार करना उचित न समझा ॥

विक्टोरियाकी सैर ।



श्रीमती जब नौ वर्षकी हुई माता उन्हें साथ लेकर फिरने जाया करती थीं बालिका विक्टोरियाके दर्शन करने लोगोंके झुंड इकट्ठे होजाते थे। श्रीमतीके मुखको देखकर लोग आँखोंकी पलकें मारना भूल जाते थे। इनके स्मितहास्य पर सब फिदा थे। बालक उनके पीछे झुंडके झुंड चला करते थे। राजकुमारी बालकोंका बड़ा सत्कार करती और गरीब बच्चोंको कुछ दिया करती थीं। एक दिन एक दीन बालककी टोपी पानीमें गिरगई। बच्चा केन्सिंगटन के मार्गमें खड़ा २ रोने लगा। उस समय श्रीमती माताके साथ कहीं जा रही थीं। बालकको रोता देखकर हृदय भर आया। अपनी मातासे नम्रतापूर्वक कहा– " माता, तुमने मुझे खिलौनेके लिये पैसे दिये हैं उनके खिलौने न लेकर मैं जो चाहूं करसकती हूं ? " माता हँसकर बोलीं " हाँ " माताके स्वीकार करतेही राजकुमारी दौड़ती हुई उस बालक के पास गई और उसके हाथमें दो क्राउन (सिक्का) रखकर चुपचाप माताके पास आ खड़ी हुई। मातासे हँसकर कहा–" क्यों माता मैंने अच्छे खिलौने लिये ना? " ॥

राजकुमारी कईबार लंडनके बाज़ारमें जाकर दूकानदारों को अपने कामोंसे हँसाया करती थीं। एकबार किसी जौहरी की दूकानपर जाकर कुछ खरीदने लगीं। इतनेहीमें एक अपरिचित स्त्री वहां आ खड़ी हुई। स्त्री खड़ी २ सोने की एक कंठीकी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगी। उसका चित्त उस कंठीपर गड़गया था परंतु कंठी का मूल्य अधिक था। स्त्री बिचारी मन मारकर चली गई। विक्टोरिया उसके मन मारनेसे दुःखित और आनन्दित हुई। जौहरी को कंठी का मूल्य देकर उसे एक डिबियामें बंद करवाया और उसमें एक चिट्ठी रखकर वह दूकानदार द्वारा उस स्त्रीके पास भेजदी ॥

बालिकाके पिता ड्यूक आफ़ केंटकी सेनामें हेलमैन नामक सिपाही बड़ा वफादार था। ड्यूक की सेनाने जिस समय उपद्रव किया इस सैनिकने उनकी अच्छी सेवा की थी। ड्यूक जब इंग्लैंड आया उसने इस सिपाहीको अपने महलके पड़ोसमें एक झोपड़ा बनवाकर रक्खाथा। ड्यूक जब मरने लगा तो अपनी स्त्रीसे इस सिपाही और उसके कुटुंबकी रक्षाका अनुरोध करगया था। हेलमैन मरगया। राजकुमारीने उसके रोगी बालककी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया। और राज्यासनपर विराजनेपरभी उसे न भूली। एकबार उसे एक पत्र लिखकर उसमें समाश्वासन दियाथा कि " मैं यद्यपि इंग्लैंडकी रानी हूं परंतु तुम्हें भूली नहीं हूं " ॥

अध्याय ४.

शिक्षा ।

जिस समय राजकुमारी का वय छः वर्षका हुआ इंग्लैंडकी पार्लियामेंटने इनकी शिक्षाके लिये ६ हजार पौंड वार्षिक व्यय नियत किया । एक स्त्री और एक पुरुष बालिकाको शिक्षा देने लगे । ईश्वरदत्त विचक्षण बुद्धि और माताके सुसंस्कारोंसे अल्पकालमें राजकुमारीने फरान्सीसी और जर्मनभाषा अच्छीतरह बोलना सीख लिया । लेटिन् और इटालीकी भाषा सीखकर वरजिल और होरेसके काव्य समझनेकी शक्ति संपादन की । ग्रीक भाषाका अभ्यासकर हिसाबपर हाथ डाला ॥

राजकुमारीको उत्तम प्रकारकी शिक्षा देनेमें श्रीमतीके मामा राजकुमार लियोपोल्ड बहुत ध्यानदियाकरतेथे । विक्टोरिया नित्य जितना सीखती एक पुस्तकमें लिखा जाताथा। उसे प्रतिमास माता सुनती और दिन २ विद्यामें अपनी प्यारी कुंमारीकी उन्नति देखकर आनन्दित होतीथीं ॥

श्रीमती बालवयसेही गानेमें जैसे चतुर थीं वैसेही नाचनेमेंभी बड़ी प्रवीण थीं । इन्होंने तीरंदाजी का अच्छा अभ्यास कियाथा । घोड़ेपर चढ़कर दौड़ानेमें राजकुमारी बहुतही प्रवीण होगई थीं । जिस समय आप स्काट्लैंडकी यात्रा करने गई घोड़े दौड़ानेमें अच्छा कौशल दिखलाया था ॥

राजकुमारीके दोनों ताउओंके शासनमें इंग्लैंडका दर्बार अनीतिका घर था और इसी कारण यह शंका कीजाती थी कि जो कुछ कालतक इंग्लैंडके राजवंश की ऐसी स्थिति रहैगी तो सर्व नाश होजायगा । इस विचारसे बालिका विक्टोरियाकी शिक्षापर विशेष ध्यान दिया गयाथा और पढ़लिखकर तैयार होनेतक श्रीमतीसे उनके राज्यारोहणकी भावी आशा गुप्त रक्खीगई थी । पुराने समयके राजाओं और बादशाहोंके शासनमें राजकुमारों को साधारण बालकोंकी तरह कड़ी शिक्षा देने और पढनेके समय मारपीट करनेके अनेक उदाहरण सुननेमें आते हैं । ऐसी ही घटना श्रीमतीके अध्ययनमें हुईथी। एक दिन राजकुमारी केन्सिंगटनके बागमें अपनी माताके साथ टहलरहीथीं । इतनेही में एक पाठशालाकी कितनीही लड़कियां वहां आ निकलीं । लड़कियोंने राजकुमारीसे सलाम किया परंतु प्रमादसे उन्होंने उत्तर न दिया । लडकियां अपने रस्ते चलींगई । यह बात माताको बुरी लगी । डचेज़ने लड़कियोंके पास नौकर दौड़ाकर उन्हें रोंका, राजकुमारीको अपने साथ लेकर उनके पास पहुँची और बेटीसे उनकी सलामका जवाब दिलवाया॥

राजकुमारी की शिक्षाके लिये जो वार्षिक वेतन गवर्नमेंटने नियत किया था उसका बहुतही सँभालके साथ खर्च कियाजाता था। माताने राजकुमारीको दस्ती कारीगरीकी ओर प्रवृत्त किया और जो बालपन वा राजघरानेके बालकोंमें हठ अथवा यथेच्छ चलनेके दोष होते हैं उनको जड़से उखाड़दिया था। जिस समय राजकुमारी किसी बातमें अन्याय करने का हठ करतीथी माता तुरंत दीनोंके दुःखकी कथा सुनाकर उनके हठका वारण करादिया करती थीं। ब्रिटिश शासनप्रणाली की शिक्षा देनेका काम मिस्टर एमोस नामक व्यक्तिको सौंपा-गयाथा। इसके सिवाय राजमाता अपनी दुलारी पुत्रीको कारखानोंमें लेजाकर मजदूरों और गरीबोंकी स्थिति दिखलाया करतीथीं। राजकुमारी को निज खर्च के लिये बहुतही थोड़ा वेतन दिया जाताथा और उसमेंसे राजमाता बालिकाके हाथसे दीनोंको दिलवाकर सुदानकी उनमें टेव डालतींथी॥

डचेजूने श्रीमतीको मितव्ययता शिखानेके लिये उनके खर्च का स्वतंत्र प्रबंध रक्खाथा। एक दिन विक्टोरिया अपनी माताके साथ किसी दूकानपर गुड़िया खरीदने गईं। गुड़ियाका मूल्य छः शिलिंग ठहरा परंतु राजकुमारी अपने मासिक वेतन को खर्च करचुकीथी। उन्होंने मातासे गुड़िया खरीदवा देनेका आग्रह किया परंतु यह बात माता को स्वीकार न हुई। उन्होंने कहा—"बेटी! तुझे जब आगामि मासका वेतन मिलै तब गुड़िया खरीदलेना अभी मैं पैसा न दूंगी।" माताके वचन सुनकर राजकुमारी महीना पूरा होनेके लिये दिन गिननेलगीं। उत्कंठा और आशामें जैसे तैसे महीना पूराहुआ। वेतन पातेही राजकुमारी गुड़िया लेनेके लिये दूकानदार के पास दौड़ीगई। छः शिलिंग देकर गुड़ियालेनेके बाद कुमारीने गुड़िया कलेजेसे लगाई और बड़े प्यारके साथ उसे लेकर ज्योंही दूकानकी सीढ़ियां उतरनेलगीं साम-नेसे एक भिखारी आता दिखाई दिया। भिखारीने बालिकाको देखकर कुछ मांगनेके लिये होंठ फरकाये परंतु लज्जा और डरसे अकचकाकर रहगया। भिखारीका दयाजन-क मुख देखकर कुमारीका हृदय भर आया। गुड़ियाका प्यार तुरंत हवाकी तरह उड़गया। प्यारके बदले दयाने हृदयमें वास किया। कुमारीने भिखारीसे पूँछा, "तुम क्या चाहते हो?" भिखारी बोला—"हाई मुझे अत्यंत भूख लगी है। जो मैं भूखसे न मरता होता तो आपसे कभी पैसा न मांगता"—राजकुमारीने मुँह बिगाड़कर कहा—"खेद है कि मेरेपास इससमय पैसा नहीं है होता तो" इतना कहतेही उन्हें कुछ उपाय सूझा। वह दबेपावं दूकानदारके पास गईं और उससे कहा—"कृपाकर यह गुड़िया अपनेपास रखिये और पैसे मझे दे दीजिये। मैं फिर आकर गड़िया लेजाउंगी।" दूकानदारने सहर्ष पैसे लौटाकर गुड़िया लेली। राजकुमारी दौड़ी

हुई भिखारीके पास गई और उसके हाथमें चुपचाप छहों शिलिंग रखदिये । भिखारी बालिकाकी दया देखकर भौंचक होगया । उसने आशीर्वाद दिया कि "परमेश्वर तुझे रानी बनावै तबभी तेरी दयाका पूरा बदला नहीं है ।" यह कहकर भिखारी चलता बना । माता पुत्रीकी दया और सुशिक्षाका उत्तम फल देखकर विस्मित होगई और उन्होंने जानलिया कि यदि परमेश्वरने इसे इंग्लैंडका राज्य दिया तो यह अवश्य प्रजाका उपकार करेगी । उसी दिन माताने अपनी दुलारीसे उसकी आशाका संकेत किया । और उन्हें इस बातसे अधिक हर्ष हुआ कि, बालिकाने राज्यकी आशासे अपरिचित रहकर योग्य शिक्षा पाई है । जो मैं इसे पहलेसेही बतलादेती तो इसमें ऐसे सद्गुण आनेकी कभी आशा न थी ॥

श्रीमतीको सुशिक्षा देनेमे केवल उनकी माताहीका ध्यान न था बरन आपकी नानी भी बहुतही दत्तचित्त थी । होम साहिबने श्रीमती के चरित्रमें लिखाहै कि रानीको विश्वास है कि, उनमें मस्तिष्क और विचारकी जितनी शक्ति है वह कोबर्ग की डचेज़ (नानी) से प्राप्त हुई है क्योंकि वह बड़ी प्रसिद्ध स्त्री थीं।उनके विचारोंमें पुरुषोंकीसी दृढ़ता, स्त्रियोंकासा प्रेम, हृदयकी कोमलता और बुद्धि थी ॥

बाल्यावस्थाकी सुशिक्षासे श्रीमतीका विद्याकी ओर दिन २ अनुराग बढ़तागया और सिंहासनारूढ़ होकर राज्यप्रबंध करने और विवाहकर घरेलू काम काज करनेपर भी आपने पढ़ना लिखना न छोड़ा । पतिवियोगसे दुःखित होकर जब श्रीमतीने कुछ कालतक इंग्लैंडमें वास कियाथा उस समयके पत्रोंका संग्रहकर उन्होंने उसे पुस्तकाकार छपवायाथा । उसकी सरल और भावपूर्ण भाषा देखकर अंगरेजी लिखे पढ़े लोगोंको बड़ा आनन्द होताहै । भाषाकी सरलता और विचारकी प्रौढ़ताके कारण श्रीमतीकी अँगरेजीकी लोगोंमें बड़ी प्रशंसा है और इसी कारण इस प्रकारकी भाषाको लोग (कीन्सइंग्लिश) कहने लगेहैं । स्त्रियोंकी भाषामें जिस प्रकारकी अशुद्धियां रहा करतीहैं वैसी श्रीमतीके पत्रोंमें नहीं रहतींथीं और श्रीमतीको पत्र लिखनेका बडा अभ्यासथा । नित्यके आवश्यक पत्रोंका नित्य उत्तर देना श्रीमती अपना प्रथम कर्तव्य समझती थीं । आपकी सब संतानोंसे आज्ञाथी कि सप्ताहमें एक बार वे उनके नाम अवश्यपत्र लिखाकरैं । घरेलू और राजकार्यके आवश्यक पत्रोंके सिवाय भिखारियों और पागलोंकीभी आपके नाम बहुत चिट्ठियां आयाकरतीं थी और ऐसा कोई पत्र नहीं आताथा जिसका उत्तर न दियाजाय । श्रीमतीके अक्षर बहुत स्वच्छ और पढ़नेयोग्य होतेथे । उनके अक्षरोंमें भ्रामकता बिलकुल न थी । आपको इतिहास पढ़नेमें बड़ा अनुराग था । धर्मके विषयमें "बाइबिल" ही आपकी प्यारी पुस्तक थी ॥

श्रीमतीको पढ़नेलिखनेमें बहुत अभिरुचि थी । इसका उदाहरण सबसे बढ़कर यह है कि, वृद्धावस्थामें आपने राजकार्यकी झंझट, कुटुंबकी उलझाहट और आप्तवर्गका शोक सहनेपरभी उर्दू पढ़ना सीखाथा । इसकार्यके लिये आगरेके एक मुसल्मान हाफिज़ अबदुलकरीम सी. आई. ई. नियत थे । श्रीमती थोड़ेही कालमें शिक्षा पाकर उर्दू भलीभाँति बोलने लगीथीं और इस बातसे उन्होंने बतला दियाथा कि उनका भारतवर्ष की प्रजापर कितना प्रेम है ॥

श्रीमतीने अपने इंग्लैंड निवास और यात्राकी पुस्तक लिखनेके सिवाय अपने प्रियपतीके चरित्र लिखनेमें सर थियोडोर मार्टिनको बहुत कुछ सहायता दीथी । सुना गया है कि, श्रीमतीरचित एक पुस्तक अभी अमुद्रित है और वह शीघ्रही प्रकाशित होनेवाली है ॥

अध्याय ९.

राजकुमारीका प्रथम नृत्य और सौंदर्य ।

जिससमय राजकुमारी आठ वर्षकी हुई डयूक आफ़् यार्कका देहांत होगया। इनका कुमारी विक्टोरिया पर बड़ा स्नेह था इसलिये मा बेटीको बड़ा खेद हुआ। उस समय राजकुमारी यह नहीं जानती थी कि डयूक आफ़् यार्कके मरनेसे इंग्लैंडका राज्यासन मेरे एक पीढ़ी निकट आगया है । राजकुमारी की बहन (डचेज् आफ़् केंटके पूर्व पतिकी कन्या) फियोडोरी का विवाह बीस वर्षके वयमें हो इन लाइलेनबर्गके राजकुमारसे जिसकी उमर केवल ९ वर्षकी थी, हुआ। और बहन फियोडोरी के सुसराल चले जानेसे कुमारीको बहुत दुःख हुआ क्योंकि श्रीमतीका इससे परम स्नेह था ॥

सन् १८२८ में पुर्तुगालकी रानी मराया डीग्लोरिया के सन्मान में इंग्लैंडके राजा चौथे ज्यार्ज ने एक बाल(नाच) दिया। इस समयसे पूर्व कुमारी विक्टोरिया पढ़ने लिखनेके सिवाय कभी राजदर्बारमें नहीं जानें पाती थीं । दर्बारमें जानेका यह पहलाही अवसर था । बालिका पुर्तगालकी रानीका ठाट और प्रभाव देखकर दंग होगई । पुर्तुगालकी रानीके वस्त्र जरीके और आभूषण हीरे मोतीके थे किन्तु राजकुमारी विक्टोरिया बहुत सादे वेशमें थीं । दर्शक लोग दोनोंका नाच देखकर चकित होगये । मंत्रमुग्धकी तरह लोगोंसे वाह २ और शाबाश २ के अतिरिक्त कुछ भी कहते न बनपड़ा। इस समय राजकुमारीने प्रथमवार नार्फोक के डयूक के पुत्र लार्डफिट्जलन, सेक्स विमरके राजपुत्र

विलियम, तरुण उमराव ईसूर हेजी और जरसीके राजपुरुषोंके साथ नृत्य किया । लीहंट नामक ग्रंथकारने " प्राचीन राज्य" नामक पुस्तकमें लिखाहै कि, " होनहार रानीके प्रथम दर्शनसे हमे जो आनन्द हुआ था वह मुझे अभीतक ज्यों का त्यों याद है । वह जिस समय आइसवाटरके राजद्वारपर से अपनी समवयस्का सखीको साथ लिये आई उसे आते देखकर हमें बोध हुआ था कि, मानो कोई स्वर्ग की अप्सरा आरही है । उसकी मुखमुद्रा और छवि दर्शकके चित्तको आकर्षित किये बिना नहीं रहती थीं " ॥

क्रेरमोंटके एक झोपड़ेमें एक वृद्धा स्त्री रहती थी । उसकी बेटी मिसजेन जिसने " स्काटके उमराव" नामक पुस्तक बनाई थी। इसी मिसजेनकी माताने बालवयमें राजकुमारीको देखनेका सौभाग्य प्राप्त कियाथा । इसने एक घरू चिट्ठीमें लिखाहै कि–" हमारी माता राजकुमारी चार्लोटको बहुत चाहती थीं । और इसी तरह उनका राजकुमार लियोपोल्डपर बड़ा प्रेम था। परन्तु राजकुमारी विक्टोरिया कुमारी चार्लोटसे बिलकुल मिलती जुलती है । मेरी माता राजकुमारी विक्टोरियाका सौंदर्य और असाधारण उत्साह देखकर बहुत हर्षित होती थी । उनके कथनकी मेरे हृदयपर अभीतक ज्योंकी त्यों छाप अंकित है । " बाल्यावस्थामें राजकुमारीकी लावण्यमयी मूर्ति, मुखपर आनन्दकी झलक हरिणोंकीसी तेजस्वी आँखें और चित्ताकर्षक सम्भाषण तथा बुद्धिकी तीव्रताके विषयमें उस समयके ग्रंथकारोंने बड़ी प्रशंसाकी है परन्तु उन दिनों समाचारपत्रोंमें ऐसी गप्पें उड़ा-करतींथीं कि रानी निर्बल है, उनमें चलने फिरनेकी शक्ति नहीं है।" जिससमय ऐसी गप्पें उड़तींथीं उसी अवसरपर कुमारी क्रेरमेण्टके मैदानमें गबड्डी लगाया करतींथीं । जब लोगोंको अन्य २ बातोंमें इनकी योग्यता अच्छी तरह विदित होगई तब एकाएक ऐसी गप्प उड़ना बन्दहुआ और साथही लोगोंकी भक्ति बढ़ निकली ॥

राजकुमारी फियोडोरीके विवाहसे पूर्व ड्यूक आफ् यार्कका देहान्त होचुकाथा इसकारण इस विवाहके पश्चात् जब माता कुमारी विक्टोरियाको लेकर यात्राको गई गावोंके लोगोंने कुमारीको बहुत ध्यानपूर्वक देखकर अधिक आनन्द सम्पादन कियाथा ।

अध्याय ६.

राज्यासनकी आशा ।

जिससमय राजकुमारी विक्टोरियाका जन्म हुआ इंग्लैंडमें श्रीमतीके पितामह तृतीय ज्यार्जका राज्य था । एकही वर्षके अनन्तर अर्थात् सन् १८२० में राजा स्वर्गको प्रयाण करगया । उसके बड़े पुत्र चतुर्थ ज्यार्जने सन् १८२० से सन् १८३० तक राज्यकिया । दूसरे भाई चतुर्थ विलियमके राज्यारंभसेही

महारानीकी शिक्षकासे बातचीत ।



लोगोंको आशा होगई कि विक्टोरिया किसीदिन इस साम्राज्यकी स्वामिनी होगी परन्तु तृतीय ज्यार्जके सातपुत्र और तीन कन्यायें थीं। दो पुत्र बचपनमें मरगये। राजा चौथा ज्यार्ज अपुत्र मरगया। ड्यूक आफ् यार्ककी भी यही दशा हुई और चौथें विलियमके कोई सन्तान न हुई। और बातकी बातमें विक्टोरिया के भाग्यका मैदान खालीकर एक २ करके उनके पूर्वाधिकारी खसकगये। महारानीके पिता ड्यूक आफ् केंटकी मृत्यु और राजा चौथे विलियमके सन्तान नहोनेसे राजकुमारी विक्टोरियाको जो राज्य मिलनेकी आशा थी वह जबतक बालिका बारह वर्षकी न हुई उनसे छिपा रक्खी गई। इसका तात्पर्य यही था कि, राजमाता, राजा विलियम और इंग्लैंड का मंत्रिमण्डल जानता था कि शिक्षा प्राप्त करनेसे पूर्व अपक्व वयमें यदि राजकुमारीको अपने सौभाग्य की खबर हो जायगी तो उनका चित्त पढ़ने लिखने और सदाचार ग्रहण करनेमें न लगैगा। इन लोगोंका विचार सच्चा निकला और इसी परामर्शका यह फल हुआ कि, राज्यासन पर विराजने बाद संसारके अनेक उपकार करनेमें यह बालिका समर्थ हुई। संसारका उपकार और इंग्लैंडकी उन्नतिके लिये मानो परमेश्वरने राजकुमारीके सौभाग्यके आड़में अनेक पूर्वाधिकारियोंको पड़दा डालकर उन्हें उत्तम शिक्षा ग्रहण करनेका अवसर दिया था और शासनके योग्य योग्यता संपादन करने बाद एक २ करके उन लोगों को खसका दिया॥

जब राज्यासन प्राप्त करनेका समय निकट आया राजमाताने राजकुमारी की शिक्षका बेरोनेस लीजन को इंग्लैंड के राजघराने की वंशावली दिखाई। राजकुमारीको इस बातकी सूचना देनेके लिये वंशवृक्ष उनकी पुस्तक में रखदिया गया। उन्होंने पुस्तक खोलतेही अचानक उसे देखा और अपनी आशाके सुखमें मग्न होगई। इस अवसरमें श्रीमतीके पास एक दासी आई। उससे राजकुमारीने पूंछा कि "यदि वर्तमान राजा—मेरे ताऊकी मृत्यु हो जाय तो फिर राजा कौन होगा?" दासी बोली—"क्लारेंसके ड्यूक।" फिर बालिकाने पूंछा—"और उनके बाद?" दासीने कुमारीको उलझाहट में डालने के लिये कहा कि—"आपके अभी बहुतसे चाचा हैं।" परन्तु उन्होंने वंशावली दिखा कर सूचित किया कि "यहां तो ड्यूक आफ् क्लारेंस के बाद मेरे पिता है इससे निश्चय होता है कि, मेरे ताऊकी मृत्युके पश्चात् मैं ही इंग्लैंड की रानी होऊंगी।" दासी चुप होगई। राजमाताने एकाएक हर्षसे पुत्रीके हृदय

पर आघात पहुँचनेका डर कर, राजकुमारीसे कहा—"बेटी, हमें पिछली बात पर भी ध्यान देना चाहिये। अभी तेरी ताई क्लारेंस की डचेज् की उमर अधिक नहीं हुई है। यदि उनके बालक होगा तो तेरा कुछ स्वत्व नहीं रहैगा। परन्तु तू मानले कि, तेरे दोनों ताऊ संतान विना मर जायँगे और तूही इंग्लैंडकी रानी होगी तो ऐसी दशामें तुझपर जो बोझा पड़ैगा उसका विचार कर और इस राज्यको रत्न समान देदीप्यमान करने और प्रजाका उपकार करने योग्यहो।"

राजकुमारीकी स्त्री शिक्षकाने एक पत्रमें लिखाहै कि, राजमाताकी सम्मतिसे उनकी पुस्तकोंमें मैंने इंग्लैंडकी वंशावली रक्खी। दूसरे दिन कुमारीने पुस्तक खोलकर मेरे समक्ष आश्चर्यपूर्वक कहा कि, मैं अब राजगादीके निकट आपहुँचीहूं। इसबातसे बहुतेरे बालक घमंडमें चूर होजातेहैं परंतु वे नहीं जानते ह कि, इसमें कितनी विडंबना है। इसमें प्रतिष्ठा बहुत है परंतु जोखिमभी कम नहीं है। मैंने (शिक्षकाने) कहा कि "आपकी ताई एडीलैड अभी युवती है। मानलो कि उनके संतान हुई तो?" "राजकुमारी बोली अच्छी बातहै। इससे बढ़कर मेरे लिये हर्षकी क्या बात है। मैं इस बातसे निराश नहीं होतीहूं" ॥

जिस समय राजकुमारीने प्रथम बार वंशवृक्ष देखा उनका वय १२ वर्षकाथा उन्होंने हर्षसे विह्वल होनेके बदले इस बातको जानतेही अपने उत्तरदातृत्वके लिये शिक्षकासे कह दियाथा और उसी दिन उनको यह बोध होगया था कि, "इसीकारण उनकी शिक्षापर इतना ध्यान दियागयाहै। उन्होंने उससे कहाथा कि, इस वैभवमें जबाबदारीका बड़ाभारी बोझा है। मैं अब जान गई हूं कि, इसीलिये मुझे लैटिन् व्याकरण और इंग्लैंडके राज्यप्रबंधकी शिक्षा दी गई है ॥

"होनहार विरवानके होत चीकनेपात" इस कहावतके अनुसार इंग्लैंडके सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक सर वाल्टर स्काटने पांचवर्षके वयमें बालिका विक्टोरियाको देखकर कहदियाथा कि "इनकी शिक्षा बहुत ध्यानपूर्वक होतीहै। और इनके ढंगको देखकर मानों कोई देवता इनसे कहरहाहै कि, तुम इंग्लैंडकी रानी होगी"। जिस समय १८ वर्षके वयमें राजकुमारीने यौवनावस्थामें पैर रक्खा उनका एकान्त वास प्रथमबार भंग किया गया था। उनको बाइबलकी वारंवार शिक्षा दीगई थी क्योंकि राजमाता और गवर्नमेंटको विश्वास था कि ब्रिटिश जातिकी उन्नति करनेवाली यही पुस्तक है ॥

सन् १८३६ के २१ अगस्तको विंडसर राजभवनमें राजा चौथे विलियम् की वर्षग्रंथि का उत्सव था। उस दिन रविवार था इसलिये उत्सवमें अधिक धूम धाम नहीं की गई थी। राजमहलमें अनुमान सौ मनुष्यों की भीड़ थी। राजाके

एक ओर राजमाता डचेज् की बैठक थी। दूसरी ओर उनकी बहनें थीं। कुमारी विक्टोरिया राजसिंहासनके सामने थीं। रानीकी इच्छासे राजाके स्वास्थ्यकी मंगल-कामनाके लिये रीतिके अनुसार मद्य पियागया राजाने सब लोगोंकी मंगलप्रार्थनाके उत्तरमें कहाकि"मुझको ईश्वरपर पूरा भरोसा है। मैं नौ मास बाद मरजाऊंगा। मेरी मृत्युपर रिजेंसीका प्रबंध न होगा किन्तु (राजकुमारी विक्टोरियाकी ओर इंगित करके) यही मेरी उत्तराधिकारिणी होगी। और उस व्यक्तिके हाथमें मेरा मुकुट न जायगा जो बुरीसंगतिमें पड़ाहुआहै। मैं बिना आनीकानीके कह हूं कि, उस मनुष्यने मेरा बहुत अपमान कियाहै परंतु मैं अपनी प्रतिष्ठाके विरुद्ध कोई वर्ताव नहीं करना चाहताहूं। उन बातों में एक यहभी है कि, वह कुमारी जान बूझकर मुझसे अलग रक्खी गईहै। मेरे दर्बारमें इसे सर्वदा उपस्थित रहना चाहिये था परंतु यह विचारी इस सम्मानसे अबतक वंचित कीगईथी। आशा है कि, अबसे ऐसा काम न होने पावेगा। मैं इसे जताये देताहूं कि, मैं राजाहूं। मेरे अधिकार की मानरक्षा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझताहूं और आगेसे मैं आज्ञा देताहूं कि, राजकुमारी अपना कर्तव्य समझकर मेरे दर्बार में सदा उपस्थित हुआकरै। यद्यपि राजाने यह बात प्रेमपूर्वक कहीथी और इसमें राजकुमारीके भविष्यत् शासनका संकेत भी था परंतु मिस्टर सी बार्नेट स्मिथने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि, यदि यह व्याख्यान दियाजाना सत्य है तो इससे उससमय बड़ी हल-चल मची होगी। मिस्टर बार्नेटने यह बात ऐतिहासिक ग्रेबाइलके आधारपर लिखीहै उनको इस कथनमें संदेह है. परंतु उन्होंने लिखा है, कि, इस वाक्यसे रानीको बहुत दुःख हुआ। राजकुमारी रोपड़ी। समस्त उपस्थित लोग घबराउठे। और डचेज् आफ् केंटने चुपचाप वहांसे खसकजानेके लिये गाडी मँगवाई। मिस्टर बार्नेट स्मिथका कथन है कि, इसमें अत्युक्ति अधिकहै परंतु इतना निश्चय है कि, राजाका स्वभाव बिगड़गया था और उन्होंने सारी बात राजमाताको इंगित करके कही थी॥

इस घटनाके एक वर्ष पूर्व अर्थात् ३० अगस्त १८३५ को सेंटजेम्सके सर्कारी गिरजेमें केंटरबरीके प्रधानपादरी के हाथसे विक्टोरिया दीक्षितहुई थी। उससमय राजमाता, राजा रानी एडेलेड और सेक्सविमरके डूयक तथा डचेज् और कितनेही राजकुटुंबके मनुष्य इकट्ठे हुएथे। उक्त पादरीने राजकुमारीको समझा दिया था कि, उनपर कितने बड़े पदका बोझा पड़नेवाला है। उस अवसरपर श्रीमतीको राजाधिराज परमेश्वरकी भक्ति और विश्वासपर कार्य करनेका उपदेश दियागया था। इस बातसे राजकुमारीके वस्त्र आंशुओंसे भीगगये और अपनी माताके कंधेपर शिर रखकर बहुत देरतक सिसकारे खाती रहीथी॥

राजकुमारीके सिद्धान्त और उत्तमताकी एक बात और भी विदित हुईहै । जिस समय उन्होंने प्रथमबार इग्लैंडके इतिहासमें वंशवृक्ष देखा वहांकी गादीके लिये अपना निकट स्वत्व देखकर अपनी शिक्षकासे कहाथा कि–" मैं अबतक सिंहासनसे जितनी निकट अपनेको समझतीथी उससेभी अधिक निकट निकली। मैं अब अच्छी होउंगी।अब मैं जानगई कि, आप मुझे इतना ध्यानपूर्वक क्यों पढाती हो । और लैटिन् सिखानेमें आपका इतना परिश्रम क्यों है। अब मैं सब बातें अच्छी तरह जानगई और मैं अब अच्छी होउंगी" ॥

अध्याय ७.

राज्यारोहणसे पूर्वकी विशेष घटनायें ।

शिक्षा प्राप्तकर प्रवाससे विशेष अनुभव संपादनकरनेके लिये राजमाताके साथ राजकुमारीको थोड़े कालतक प्रवास कराया गयाथा । जहाँ जहाँ राजकुमारी गई प्रजाने बहुतही हर्ष और हार्दिकप्रेमके साथ श्रीमतीका आदरकिया और अभिनन्दनपत्र दिये । सन् १८३३ में आइल् आफ् वाइट्से लौटते समय एडिथस्टोन और नौरिशके मध्यमें एक पुरानी नौकाके टुकड़ेसे राजकुमारीका जहाज टकरागया । टकरातेही जहाजका एक भाग टूटगया । संडर नामक पाइंटर राजकुमारीको तुरंत उठाकर एक ओर लेगया और इसतरह उनके प्राण बचे । सब साथियोंको प्रथम बड़ी चिन्ता हुई और फिर लोगोंने हर्षकी बधाइयां दीं ॥

यात्रासे लौटनेपर राजकुमारीको बहुत भयंकर बीमारी भोगनीपड़ी । आरोग्य होनेके अनन्तर वेस्ट मिन्स्टर राबीके एक बडे जलसेमें राजकुमारी उपस्थित हुई और सन् १८३५में उन्होंने एस्कोटमें घुड़दौडकी शर्तें और सेनाकी कवाइद देखी।

जिन दिनों राजकुमारी विक्टोरिया अपनी माता सहित केनसिंगटनके राजमहलमें निवास करती थीं सैक्सकोबर्गके ड्यूक अपने दो पुत्र राजकुमार अर्नेस्ट और राजकुमार एलबर्ट सहित यात्रा करते समय राजकुमारीके यहां आकर चार सप्ताहतक पाहुने हुए। राजकुमारी को अपने भावी प्राणनाथके दर्शन होनेका यह पहलाही अवसर था । आगत पाहुनोंका यहाँ बड़ा स्वागत हुआ । इसी अवसरपर राजकुमारी विक्टोरिया और राजकुमार एलबर्टके हृदय मंदिरमें परस्परके प्रेमने निवास किया । इसीसमयसे दोनों जानने लगे कि प्रणय क्या वस्तु है, मनहीमन दोनोंके प्रणय की तरंगें उठने लगीं और दोनोंही भावीसुखके लिये मनहीमन आनन्दसागरमें निमग्न हुए । मनके विचारों और पर-

स्परकी ताक झांकके सिवाय इस समय कुछ बातें न हुई और एक मासके तीस दिन एक घड़ीके समान बिताकर दोनों प्राणप्रिय प्राणप्रियाकी माधुरी मूर्तियां अपने २ हृदयमन्दिरमें निवासकरा वियोगका सुख अनुभव करनेके लिये अलग हुए । इनके मनोंकी उलझाहटकी किसी को खबर न हुई ॥

२४ मई सन् १८३७ ई० को राजकुमारी विक्टोरियाने पूरे अठारह वर्ष व्यतीत कर बाल्यावस्थासे युवावस्थामें पैर रक्खा । अब बालिका विक्टोरिया युवतीवि-क्टोरिया कहलाने लगीं । उस दिन वर्षग्रंथिके हर्षमें केन्सिंगटनका राजप्रासाद दुंदु-भी और अन्यान्यनादोंसे गाजउठा । दिनभर अभिनंदनसूचक पत्रों और बधाईकी चिट्ठियों से राजभवन भरगया । राजा चौथे विलियमने दो हजारके मूल्यका एक पायनो बाजा भेंट किया । और यहभी प्रकाशित किया कि, मैं अपने निज खर्चेमेंसे दश हजार पौंड वार्षिक दिया करूंगा। परंतु राजकुमारी मेरे मंत्रियोंकी सम्मतिसे कामकरै । राजकुमारीने यह शर्त स्वीकार न की । इस महोत्सवमें लंडनके बडे २ उमराव इकट्ठे हुएथे किन्तु राजा विलियम बीमारीके कारण नहीं आसके । इस दिन लंडन नगरमें घर २ दिवाली हुई और राज्यभरमें उत्सव कियागया । इसी अवसरपर लंडन नगरकी सिटी कौन्सिलने राजकुमारीको एक अभिनंदनपत्र भेंट किया । इसे लेकर लंडनके लार्ड मेयर केन्सिंगटनके राजमहलमें आये । पत्रके उत्तरमें राजमाताने कहा कि–"राज्यके प्रत्येक पक्षसे हम बिलकुल अलग रहीहैं । मैंने अपनी प्रियपुत्रीको प्रजाहित और राजधर्म शिखानेमें न्यूनता नहीं रक्खीहै । मैंने स्वतंत्रलोगोंका मुख्य कर्तव्य राजकुमारीको भली भाँति समझादिया है । राजकुमारी अब अपनी युवावस्थाको पहुँचगईहैं । मुझे आशा है कि, जो काम इसे दियाजायगा उसे यह पूर्ण कुशलतासे संपादनकरैंगी । इसका मुख्य कर्तव्य यहीहै कि–धर्म, ज्ञान और स्वतंत्रता, उद्योग प्रजाकी सम्मति और प्रजाके हितकी कामना करना" । राजकुमारीने अभिनंदनपत्रके विषयमें परम मधुरस्वर और मृदुहास्यसे कहा कि–" आपके स्नेहका मैं उपकार मानतीहूं । मेरी माताने मेरी इच्छा भलीप्रकार प्रकाशित कीहै" ॥

अध्याय ८.

राजा विलियमकी मृत्यु ।

सन् १८३०ई० में जब राजा चतुर्थ ज्यार्जका देहान्त हुआ उनके भाई ड्यूक आफ् क्लारेन्स चौथे विलियमके नामसे गादीपर विराजे । राजा विलियमके

संतान होनेकी आशा न थी इसलिये कुछ कालके पश्चात् पार्लियामेंटमें राज्यके भावी वारिसके विषयमें रिजेंसीबिलके नामसे लार्ड लैंडहर्स्टने एक पांडुलिपि उपस्थित की। इसमें यह निश्चय किया गया था कि यदि राजा विलियम बिना संतान मरजावे तो राजकुमारी विक्टोरिया राज्यासनपर विराजे और उनकी माता उनकी रक्षाको नियत हो । इस पांडु लिपिके पास होने पर राजकुमारीकी शिक्षाके लिये ६ हजार पौंडकी जगह १० हजार पौंड नियत हुए। राजा विलियमके पट्टाभिषेकके समय राजकुमारी विक्टोरियाको उपस्थित न होनेदियाथा। इसबातकी लंडनके समाचारपत्रोंने बहुत निन्दा की और दोषका बोझा राजमातापर मढा। वे उस समयतक नहीं जानते थे कि, इस अवरोधसे देशकेलिये बहुत बड़ा कल्याण होनेवालाहै ॥

राजकुमारी विक्टोरियाकी उन्नीसवीं वर्षगाँठके दिन बीमारीके कारण राजा विलियम नाचमें उपस्थित न होसके थे। मईका अंत होनेके साथही राजाकी अशक्ति बढ़गई। उनके शरीरमें श्वास लेनेकाभी बल न रहा। १८ जूनको राजाने राजद्रोहियोंका अपराध क्षमा करनेके पत्रोंपर हस्ताक्षरकिये। वह दिन वाटर्लू युद्धमें विजय पानेका था। राजाने डाक्टर चैम्बर्ससे कहा कि, भाई! आजके विजयी दिवस भरमें फिर जीना चाहताहूं। दूसरे दिन अर्थात् १९जूनके प्रभातमें राजा जागा और दिनभर ईश्वरप्रार्थना और रानीके संबोधनके अनन्तर स्मरण रक्खो कि "मैं आस्तिक राजाहूं"। कहते हुए रात्रिके दो बजे इस असारसंसारको छोडकर उसने स्वर्गका मार्ग लिया। और ऊपर जिस बिलका वर्णन हुआहै उसके अनुसार राजकुमारी विक्टोरिया उत्तराधिकारिणी हुई ॥

राजाकी मृत्युपूर्व हेनोवरका परगना इंग्लैंडके साथ जोड़दिया गयाथा और तबसेही इंग्लैंड और हेनोवरका राज्य संयुक्तथा। परंतु हेनोवरके राज्य नियमानुसार वहांका मुकुट स्त्रीके शिरपर रखनेकी चाल नथी. इसलिये हेनोवरका राज्य इंग्लैंडसे अलग किया गया और कम्बलैंडके ड्यूक जान अर्नेस्ट आगस्टसको वहांका राजा बनायागया। हेनोवरकी प्रजाको ड्यूकके अत्याचारोंका कष्ट हुआ और इंग्लैंडकी प्रजाने समझा। कि, इस राज्यके अलग होनेसे बहुतसा खर्चेका बोझा टलगया इसकारण उसने हर्ष किया ॥

अध्याय ९.

राज्यप्राप्तिके समाचार पाते समय विक्टोरिया का चित्र ।



सिंहासनारोहण ।

राजा चतुर्थ विलियमका स्वर्गवास हुआ। २०जूनके प्रातःकालके सूर्योदय के साथही रानी विक्टोरिया, ब्रिटिशजाति और भारतवर्षके भाग्यका उदय हुआ। राजाके मरणकी शोकसूचना और रानी विक्टोरियाके सिंहासन प्राप्त करने की बधाई लेकर कैंटरबरीके प्रधान पादरी, लार्ड चैम्बर्लेन, अर्ल एलवरमैन ओर सर हेनरी हेली फाक्स विंडसर केसलसे रात्रिके २॥ बजे चलकर प्रभातके पांच बजते २ केन्सिंगटन महलमें पहुँचे। द्वारपालको जगानेके लिये किंवाडे खटखटाये, घंटा बजाया और पुकार मचाई परंतु द्वारपाल जो सुखकी गाढ निद्रामें सोरहा था न जागा। थोडी देर मार्गप्रतीक्षा करनेबाद द्वारपाल जागा। उमरावोंका संदेशा लेकर वह भीतर गया और तुरंतही लौटकर कहा कि– "राजकुमारी प्रगाढ निद्रामें मग्न हैं। इस समय जगानेका हमारा साहस नहीं होता है"। उन्होंने क्रोधके साथ द्वारपाल को समझाया कि–"भैया, राज्यका बहुत आवश्यक काम है। रानीको शीघ्र जाकर जगाओ"। तुरंतही राजकुमारी जागीं। और हडबडीमें उठकर रात्रिके वस्त्र पहने हुए, दुशाला लपेटकर, पैरोंमें स्लीपर पहने, कंधेपर बिखरेहुए केशोंसे, मंदगति और आँसूभरी आँखोंसे बाहर आईं। उमरावोंका संदेशा सुनतेही अकचकागईं और रोते २ कहा "आप सब मेरेलिये ईश्वरसे प्रार्थना कीजिये"। यह रुदन पितृव्यके मरण के लिये न था और न राज्य पानेके हर्षके आनन्दाश्रु थे किन्तु अपने ऊपर काम और कर्तव्यका बडाभारी बोझा पडता देखकर उसके पालन करनेकी चिन्ताकी सूचना देते थे। सुनतेही सब लोगोंने रानीके साथ मिलकर एकचित्तसे ईश्वरसे प्रार्थना की। शुभ सूचना और ईश्वरप्रार्थनाके पश्चात् सरदार वहांसे बिदा हुये॥

इसके अनन्तर रानी विक्टोरियाने प्रथम कार्य किया। वह कार्य रानीके सच्चे अंतःकरण और उदारवृत्तिका उत्तम उदाहरण है। रानीने उसी समय मृतराजाकी पत्नीके नाम एक सहानुभूति सूचक पत्र लिखा। उसका अनुवाद लिखनेकी आवश्यकता नहीं है, किन्तु इतनाही लिखना रानीके सुविचारोंको प्रकट करताहै कि श्रीमतीने उस पत्रमें रानी एडीलेडको एक स्थलपर "श्रीमती इंग्लैंडकी रानी" के नामसे संबोधन किया। इससमय एक मनुष्य खड़ा हुआ रानी विक्टोरियाका पत्र पढ़रहा था। उसने कहा कि, अब रानी एडीलेडको इंग्लैंडकी रानी लिखना उचि-

त नहीं है क्योंकि इंग्लैंडकी रानी आप हैं । उनके पत्रमें "विधवा रानी" लिखिये" श्रीमती विक्टोरिया बोलीं—" राम राम, इस दुःखिता अबला को सबसे पहले इस कष्टकी याद दिलाना मेरा काम नहीं है । मैं जानती हूं कि, ऐसाही लिखना चाहिये परंतु मैं उनका हृदय दुखाना नहीं चाहती हूं" । इस चिट्ठीमें सहानुभूति और प्रेमके साथ लिखाथा कि " आप अपने शरीरकी रक्षापर अच्छी तरह ध्यानदें और जहाँतक इच्छाहो सुखसे विंडसरके राजमहलमें निवास करें। वह आपका ही है" ॥

प्रातःकालके नौ बजे इंग्लैंडके प्रधान अमात्य लार्ड मेलबोर्नने रानीके महलमें आकर दोघंटेतक राजकीय गुप्तबातों में संभाषण करनेबाद प्रिवीकौंसिल जो आजकल केबिनेट (मंत्रिमंडल) के नामसे प्रसिद्ध है उसे एकत्रित करने का निवेदन किया । इतिहासवेत्ता कार्लाइलने लिखाहै कि "एक तरुणी बालिका जिसने अभीतक संसारका राग रंग नहीं देखा है, जो अभीतक नहीं जानती है कि, राज्यप्रबंध क्या वस्तु है उसने इतनी त्वरा, गांभीर्य और उत्साहसे काम किया कि जिससे उस समय और आज के मनुष्यों को आनन्दयुक्त आश्चर्य हुवा " रानीने तुरंत उठकर मेलबोर्नकी प्रार्थना को स्वीकार किया और एक सदाके अनुभवी राजपुरुषकी तरह कार्य आरंभ करदिया



महारानीका शपथ लेते समयका चित्र।



२० जूनको दुपहरीमें केन्सिंगटनमें मंत्रिमंडल इकट्ठा हुआ । प्रिवीकौंसिल की ओरसे रानीके नामका अभिनंदन पत्र पढ़ाजानेके अनन्तर श्रीमती की ओरका ढिंढोरा बाँचकर सुनाया गया। श्रीमती शुभमुहूर्त्तमें सादे शोकवस्त्रोंसे अलंकृत होकर प्रथमबार सिंहासनासीन हुईं और विराजतेही मंजुल, स्पष्ट और गंभीर शब्दोंमें कौंसिलको निम्नलिखित प्रस्ताव पढ़कर सुनाया:–

मेरे प्रिय ताऊ श्रीमान् राजासाहबकी मृत्युसे प्रजाको बहुत बडा दुःख और शोक हुआहै। और इसी कारणसे मुझपर राज्यभार आपड़ा है । यदि मैं यह न जानतीकि इतना बडा काम मुझे ईश्वरकी इच्छासे नहीं सौंपागया है और सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस कार्य के संपादन करनेमें मेरी सहायता न करेगा तो इस जोखिमके कामके बोझेसे, जो अकस्मात् मेरे ऊपर आपडा है मैं दबजाती और साथही मुझे यदि यह विदित न होता कि, प्रजाके कल्याणके लिये उसकी ओरसे आश्रय न मिलैगा। मेरी प्रजाके प्रेम और भक्तिपर तथा पार्लियामेंटकी बुद्धिमानीपर मुझे पूरा भरोसाहै। मुझको बहुत बडा लाभ यह हुआ है कि, मैं जिस गादीपर आसीन हुई हूं उसके पूर्वाधिकारी अपनी प्रजा की स्वतंत्रताके स्वत्वोंके लिये बडा गर्व रखतेथे और उनकी मुख्य इच्छा यही थी कि, देशको आईन के बंधनोंकी सुउन्नति (Amelioration) करना और प्रजाके सामान्य सुखपर भलीप्रकारसे ध्यानदेना ॥

"मेरी प्रिय माताकी रक्षामें रहकर मैंने जो इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की है उससे मैं सीखगईहूं कि देशकी नीति का किस प्रकार आदर करना और उस से क्योंकर प्रेमरखना चाहिये। मैं देशके धर्मका संरक्षण करूंगी सब लोगों को यथेच्छ रीतिपर धर्मका सुखभोगने दूंगी और सब जाति और धर्मवाली मेरी प्रजाके हितमें सबप्रकारका श्रम करूंगी" ॥

रानीने जब इस व्याख्यानको समाप्त किया तो फिर धर्मसंबंधी प्रतिज्ञा की और उनके दोनों चचाओंनेभी सौगंद खाये। इसके बाद दोनोंने रानीके पैरों पडकर उनके हाथका चुंबन किया । रानीने उन दोनोंके सम्मान में उनके हाथ चूमे। और ड्यूक आफ् ससेक्सका आदर करने के लिये सिंहासन पर से खड़ी होगई। रानीके गंभीर भाव और इस समय यथातथ्य कार्य करनेसे ड्यूक आफ् वेलिंगटन और पील आदि राजपुरुष चकित होगये। रानीके व्याख्यानमें सुउन्नति (Amelioration) शब्दका प्रयोग हुआथा इसपर लार्ड ब्रूहमने तर्क किया। उनका कहना यह था कि, यह शब्द अशुद्ध है। सर राबर्ट पीलने उनका यथातथ्य उत्तर दिया। इस प्रश्नोत्तरसे दर्बारमें कुछ हल चल

मचगई परंतु श्रीमतीके बर्तावमें बिलकुल अंतर न आया । समस्त काम काजमें उन्होंने इतना गांभीर्य दरशाया कि, ड्यूक आफ् वेलिंगटनको स्वयं कहनापडा कि "मुझको अपनी लडकीकी ओरसे भी इससे अधिक गांभीर्यकी आशा नहीं है" । राजकर्मचारियोंने सरकारी कागजोंपर "एलेक्ज़ेंड्रिना विक्टोरिया" नाम छपवायाथा किन्तु रानीने अपने हस्ताक्षरमें केवल "विक्टोरिया" लिखा इसलिये काम काजमें थोडी गड़बड़ मची और उन काग़ज़ो की काटछांट करनापड़ी ॥

परमेश्वर की कृपासे २० जूनको सेंटजैम्सके महलमें राजकुमारी विक्टोरिया ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैण्डकी रानीके नामसे प्रतिष्ठितहुई । रानीके दर्शनके लिये राजमार्ग लोगोंके झुंडोंसे भरगया । घर २ आट्टालिका २ खिड़की २ और गोख २ में स्त्री पुरुष बालक युवा युवती और वृद्धवृद्धाके ठाठ लगगये । वृक्षोंकी डालियां और मकानके छप्परोंतकमें लोगोंको बैठनेकी जगह न मिली । आयर्लैण्डके राजद्रोही लोगोंकी मुखश्री देदीप्तहुई । उनके चित्तपरसे दुविचारोंने पलायन किया और बाघ बकरी एक घाट पानी पीनेकी भावी आशामें लोग परस्परका द्वेष और क्रोध भूलगये । दोबजे तोपखानेंसे १०१ तोपोंकी सलामी कीगई । कानकी चैलियां उडाने वाले हर्षनादसे रानीको प्रजाने बधाई दी । ऐसे समयमें रानीने लोगोंको दर्शनदिया । यद्यपि उस समय अधिक कामकाजसे श्रीमती थकगईथीं और उनके वस्त्रालंकारभी ताऊकी मृत्युके कारण शोकसूचक और सादेथे परंतु उन श्रमबिन्दुओंमें सौंदर्य और सादगीमें शोभाकी झलकथी । दर्शनकरतेही उच्चस्वरसे प्रजाने

"परमेश्वर रानीकी रक्षाकरो"

का जय घोष किया । इस गीतके समाप्त होतेही सर विलियम उडले और ड्यूक आफ् नार्फोकने भीडके समक्ष आकर राजा चतुर्थ विलियमके मृत्युसम्वाद और श्रीमती रानी विक्टोरियाके सिंहासनारूढ होनेका ढिंढोरा उच्चस्वरसे पढ़कर सुनाया । ढिंढोरा सुनतेही प्रजाने फिर "परमेश्वर रानीकी रक्षाकरो" की गर्जना करी । उस समय रानीकी आँखोंमेंसे आँसुओंकी दो चार बूँदे निकलपडीं ॥

साधारण राजरीतिसे छुट्टीपातेही रानी विक्टोरिया दौडीहुई अपनी प्रियमाताके कमरेमें गई और उनकी गोदीमें बैठकर आँसूकी नदी बहानेलगीं । माताने नम्रतासे पुत्रीको समझाया तब रानी बोलीं:—

"माता मैं कदाचित् अबभी भरोसा नहीं करतीहूं कि, मैं अब इंग्लैंडकी रानी होगईहूं परंतु मैं सोचतीहूं कि मैं रानी होगई । क्या मैं नहीं हूं" ?

माताने उत्तर दिया:–"मेरी प्यारी! तू जान्तीही है कि, तू रानी होगईहै । अभी तैंने जो दृश्य देखाहै उसीसे तुझे इसबातका विश्वास होगया होगा" ॥

रानी:–"अम्मा, जबतक मुझको अपने स्वभाव बदलनेकी टेव न पड़जावे और आपकी छोटीसी बालिका इस बृहत् राज्यकी वास्तविक स्वामिनी न बनै मैं आपसे एक बात मांगे लेतीहूं। मेरी प्यारी माता मैं चाहती हूं कि, आप मुझे अभी दोघंटेतक एकांत रहनेकेलिये छुट्टीदे।" राजमाता इस प्रार्थनाका आशय समझगई और उसी दिनसे उन्होंने अपनी कन्यासे अलग होनेका आरंभ किया रानीने उस समय माताके बाहर जातेही ईश्वरसे प्रार्थना की ॥

रानी विक्टोरियाके होनहार प्रियतम राजकुमार एलबर्ट उन दिनों बोन नगरमें पढ़तेथे । उनके पास यह शुभसंवाद पहुँचा । समाचार पातेही उन्होंने श्रीमती-को एक पत्र लिखा उसका आशय यह है:–

२६ जून सन् १९३७ ई०

"अब आप यूरोपके एक परम बलाढ्य राज्यकी स्वामिनी हैं । आपके हाथमें लाखों मनुष्योंका सुख दुःख है । परमात्मा आपको इस बृहत् और कठिन कार्यमें सहायता दे। मुझे आशां है किं, आपका शासन दीर्घ, हर्षमद और प्रभावशाली होगा। और आपको अपने परिश्रमके बदलेमें प्रजाकी ओर से धन्यवाद और प्रेम प्राप्त होगा" राजकुमारकी इससमय विलक्षण दशा थी । उनके चित्तपर प्रियासे शी-घ्र समालाप करनेकी उत्कंठा बढ़गईथी और वह अनेक प्रकारके सोच विचारमें निमग्नथे किन्तु रानी और राजकुमारके मित्रोंने दोनोंकी आन्तरिक इच्छाका इस समय प्रकाशित होना उचित न समझा । और मित्रोंके परामर्शसे राजकुमार एलबर्ट अपने भाई सहित स्विट्जर लैंड और इटालीकी ओर चलेगये ॥

रानीके राज्यारंभसेही उनपर प्रजाके प्रेमका इससे बढ़कर क्या उदाहरण होसकता है कि एकबार किसी राजद्रोही दुष्टने कहदिया कि "इस बालिका रानीको गादीसे उतारकर ड्यूक आफ् कम्बरलैंडको बिठाओ" इसपर ओकोनलने जोशमें आकर उसको इतना डांटा कि, उसके होश उडगये । मिस्टर ओकोनल बोले–"जिस युवतीसे इंग्लैंडका राज्यासन अभी शोभित हुआहै उसके प्राण, प्रतिष्ठा और शरीर की रक्षाके लिये मैं इसीदम ५ लाख बीर आयर्लैंडवासी सैनिकोंको इकट्ठे करसकताहूं" ॥

राज्यप्राप्तिके साथही साथ प्रजाकी रानीपर भक्ति बढ़ने के अनेक कारणथे । उनमेंसे एक यह भी है कि वह दया करनेमें अप्रतिमथीं । राज्यप्राप्तिके प्रथम वात्सरिक उत्सवके बाद ड्यूक आफ् वेलिंगटनने एक पत्र उपस्थित किया उसमें एक सैनिकको जिसने कुछ सेनासंबंधी अपराध कियाथा फाँसी देनेकी

उस समयके नियमानुसार आज्ञा माँगी गईथी । रानीने पत्र सुनतेही पूंछाः- "क्या इस सैनिक की ओरसे बचाव के कुछ प्रमाण नहीं हैं" ? इसपर वेलिंगू-टनने कहा-"जी हां यह बहुत बुरा मनुष्य है इसे अवश्य दंड मिलना चाहिये" । इसपर रानीने डचूक से आज्ञा की कि "इसपर एकबार फिरभी विचार करलो" डचूक बोले- "सरकार, मैं पहलेही प्रार्थना करचुका हूं कि, यह सेना में रखने योग्य नहीं है परंतु कोई २ कहते हैं कि, इसका घरू बर्ताव अच्छा है" । सुन-कर रानीने उस पत्र पर लिखदिया कि " इसका अपराध क्षमा किया गया " उसी दिनसे पार्लियामेंटने जानलिया कि, रानीकी बडी दयालु प्रकृति है । इस-लिये उसने फाँसी की आज्ञाका कार्य रानीसे लेकर रायल कमीशनको दे दिया ॥

अध्याय १०.

शासनारंभ ।

राजा विलियम लिबरलपक्षका था परंतु इस बातसे सदा डरा करता था कि कहीं प्रजामत बल न पकड बैठे इसलिये दोनों दलोंसे मिलजुलकर चलता था। उसके समयमें मंत्रिमंडलभी लिबरलथा किन्तु राजाके संकीर्ण विचारके कारण सदा मन खोलकर कोई काम नहीं करता था । राज्यपरिवर्तनके साथ ही मंत्रि-मंडलने चमक दिखाई। कन्सर्वेटिव दल नरम होगया क्योंकि रानीकी माता और रानी दोनों लिबरल मतके थे । इससे जो समाचारपत्र लिबरल दलके थे उन्होंने जयघोष किया और प्रतिपक्षी कुढ़ने लगे । प्रधान अमात्य लार्ड मेलबोर्न मध्यस्थ बनकर रानीको अपनी ओर करनेके लिये जबतक कोई प्राइवेट सेक्रे-टरी नियत न हो नित्य उन्हें कामकाज समझाने जाया करते, लिबरल और कन्सर्वेटिवके भेददिखाने और समस्त झंझटकी बातें सुझाया करते थे । इनकार्यों के लिये कभी २ उन्हें दिनमें चार पांच बार तक मिलना पडता था । यह बात डचूक आफू वेलिंग्टनको पसंद न थी परंतु लार्ड मेलबोर्नकी चालसे वह कुछ-कर नहीं सकते थे ॥

रानीने सिंहासनपर विराजतेही लार्ड डरहामको जी. सी. बी. की उपाधि दी । यह कार्य उन्होंने माता, शिक्षका और लार्ड मेलबोर्नकी प्रेरणासे किया । लार्ड मेलबोर्न सदा श्रीमतीको अच्छी सलाह दिया करते थे और रानी उनपर बडी दया रखती थीं । उनपर रानीका पूरा भरोसा था परंतु सदा उन्हींके कहने-के अनुसार नहीं चलतीं थीं किन्तु स्वतंत्रतासे अपनी सम्मति दिया करतीं थी ॥

अबसे श्रीमती बकिंगहामके राजप्रासादमें रहने लगीं। १३ जुलाईसे व-हां रहना आरंभकर ४ दिन पीछे पार्लियामेंट विसर्जन किया। जिस समय वह बकिंगहाम महलसे पार्लियामेंट भवनको गई राजमार्ग में लोगोंकी भीड़से तिल-धरनेका स्थान न था। प्रजाने रानीकी जयघोषणाकर हर्ष प्रकट किया। दर्बा-रमें पहुँचतेही उमरावोंने झुक २ कर सलाम किया। रानीने आसन लिया और सबलोग खड़े रहे। उस समय श्रीमती श्वेत साटिनका गौन पहने हुएथीं। गार्टर क्रास कंधेपर लटकता था। मस्तकपर रत्नजटित मुकुट और गलेमें हीरेका हारथा। सिंहासनपर विराजतेही लार्ड मेलबोर्नने कानमें कहा " लार्ड लोगों को बैठनेकी आज्ञा दीजिये क्योंकि विना आज्ञा ये बैठेंगे नहीं " रानीने उमरा-वोंसे कहा– " मेरे लार्डो बैठो "–सब लोगोंके यथा स्थान बैठते ही श्रीमतीने अपना प्रथम व्याख्यान पढ़कर सुनाया। उसका अंतिम वाक्य यह था–"परमे-श्वरकी कृपासे मैं अपने शिरका बोझा उठासकूंगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि, वह मेरा सहायक होगा। मैं धार्मिक और सांसारिक कार्योंकी रक्षा करूंगी। बहुत उन्नति करूंगी, सबको समान गिनूंगी और मेरी इस योग्य इच्छाके लिये पार्ली-यामेंट सहायता देगी" वस्तुतः अंत समयतक श्रीमतीने अपने वचनोंका पालन किया और इसीकारणसे उनका दीर्घ शासन काल यशस्वी कहलाया। इस व्याख्यानको उन्होंने बहुतही मधुर और उच्चस्वरसे सुनाया। सुनकर श्रोता-गण दंग होगये। फेनी केम्बल नामक ग्रंथकार जो उस समय उपस्थित था उसने लिखाहै कि "जिससमय रानीने व्याख्यानके आरंभ में संबोधन करनेके लिये " मेरे लार्ड और शिष्ट पुरुषो " कहा सभाका सन्नाटा एक ऐसे मृदु और मंजुल स्वरसे भंग होगया जिसे एकवाद्यकी उपमा दे सकते हैं"। उस समय रानीका सौंदर्य रतिको लज्जित करता था। तुलसीदासजीकी–"सुंदरता कहँ सुन्दर करही। छबि गृह दीपशिखा जनु बरही"–चौपाई आँखके सामने नाच रही थी॥

राज्यासनपर विराजतेही श्रीमतीने लार्ड मेलबोर्न से कहा कि " मुझे अपने पिताका ऋण चुकाना है। मैं इस कार्यको प्रथम करूंगी। यह मेरा पवित्र धर्म है"। यह बात कहते २ ही रानीकी आँखोंमें आँसू डबडबा आये। कोमल कपोलोंपर जलकी धारा बहने लगी और गला भर आया। ड्यूक आफ् केंट बडे उदार परोपकारी और खर्चीले थे। उनको वेतन बहुतही थोडा मिलता था इसकारणसे उनको ऋण होगया था। जबतक श्रीमतीने पिताका ऋण न चुकाया उनके चित्तको चैन न हुआ। पिताको ऋण फिटजू

विलियम और डनडास नामके दो उमरावोंका देना था । रानीने अतिविनीत-भावसे पत्र लिखकर उन्हें धन्यवाद देते समय कहा कि "आप लोगोंने इतने समयतक धैर्य रक्खा जिसकेलिये मैं बहुत उपकृत हूं"। ऐसाही पत्र उन्होंने पिताके मित्रोंको लिखा था ॥

शासनारंभके पश्चात् अनेक प्रकारकी गप्पें उडने लगीं । कितनेही लोग कहनेलगे कि रानीमें दम नहीं है । वह अपनी सखी बेरनस्लेज़की सलाहसे चलती हैं और कोई कहता था कि, लार्ड मेलबोर्नही उनके पास कर्ता धर्ता हैं। ऐसी गप्पें उडने का एक कारण यह मानाजाता है कि, राजा चौथे विलियमके कृपापात्र सरजान कानराय पर रानीका अचानक कोप हुआ । यद्यपि इसका कारण कुछभी प्रकाशित नहीं हुआ परंतु लोगोंने अनुमान किया कि रानीकी सखी बेरनस्लेजसे उसकी शत्रुता थी । कितनेही लोगोंका कथन यह है कि, राजा विलियमने राजमाता डचेज़से भरे दर्बारमें जो कटुवचन कहे थे वे इसीकी प्रेरणासे थे और इसीकारण विक्टोरिया सरजान कानराय पर अप्रसन्न हुई । वास्तवमें बात यह है कि, ये गप्पें मिथ्या हैं और सरजान कानराय अपनी इच्छासे ही अलग रहा था ॥

लार्ड मेलबोर्नका रानीपर बहुत बडा प्रभाव था । ग्रेविलने लिखाहै कि "रानी-केवल राजकाजमें ही मेलबोर्न पर भरोसा नहीं रखती थीं किन्तु साधारण कामोंमेंभी उनकी सम्मति से चलती थीं"। एकबार किसी व्यक्तिने अपनी पुस्तक रानीके समर्प्पण करनेकी इच्छासे आज्ञा मांगी । रानीने कहा कि "मैं विना इस पुस्तकका स्वरूपजाने इसबातको स्वीकार न करूंगी"। और जांचकेलिये पुस्तक मेलबोर्न को देदी । उन्होंने पुस्तक देखकर कहदिया कि "इसका समर्पण स्वीकार करना उचित नहीं है । बस रानीने पुस्तक लौटादी "। लोग चाहे जो कहें परंतु इस अध्याय में लिखी हुई घटनाओंसे मेरी समझमें यह सिद्ध नहीं होताहै कि, रानी मेलबोर्नके हाथका खिलौना थीं अथवा जैसे उनकी सखी सम्मति देतीं थीं वैसेही चलतीं थीं ॥

एक दिन राजघरानेकी एक प्रतिष्ठित स्त्री रानीसे मिलने आई । उसे नियत समयसे आनेमें कुछ देरी होगई थी। लेडीने श्रीमतीसे क्षमा माँगकर कहा कि "मुझे भय है कि, मैंने आपको बहुत देरतक रोक रक्खा । " रानी बोलीं—"निस्संदेह ! दश मिनट और अब मैं चाहतीहूं कि ऐसीबात आगेसे कभी न होनेपावे" इतना कहतेही लेडीके होश उड़गये । घबराहटमें उसके कंधेसे शाल गिरगई । रानीने जानलिया कि, मेरे कथनसे इसके चित्तपर आघात पहुँचाहै इसलिये उन्होंने

उसकी शाल अपने हाथसे ठीक करके कहा कि "अस्तु, जो हुआ सो हुआ । अब मुझे आशा है कि, हम अपना काम यथासमय करलेंगे" ॥

रानीके शासनके विषयमें जो गप्पें उडरहीथीं उनमें कहाँतक सत्यता है और लार्ड मेलबोर्नका उनपर कितना प्रभावथा इसबातका निर्णय हेनेकी कोई सामग्री नहीं है। लोग चाहें जितनी गप्प उडातेथे कि, रानी काम करनेमें अशक्त है और जो कुछ मेलबोर्न करतेहैं वही होताहै। किन्तु यह विश्वासनीय मार्गसे जानागया है कि वह जितने पत्र श्रीमतीके समक्ष उपस्थित करतेथे उनपर अच्छी तरह प्रश्न किये और उनकी देखभाल किये विना श्रीमती कभी हस्ताक्षर नहीं करतीथी। एकबार किसी आवश्यक काग़ज़पर मेलबोर्नने अक्षरकरानेका हठकरनेके साथही कहाथा कि, यह पत्र राज्यके बहुतलाभका है परंतु रानीने स्पष्ट उत्तर देदिया कि, "चाहे जैसा लाभदायक हो किन्तु जबतक मैं अच्छीतरह समझ न लूंगी अक्षर कदापि न करूंगी"।कुछभीहो इतना अवश्यहै कि, लार्ड मेलबोर्नसे रानीने राजकार्य की बहुत शिक्षापाई थी और वह उनका सबसे अधिक सम्मान करती थी ॥

अध्याय ११.

गिल्डहाल का दरबार और पहली पार्लियामेंट ।

राज्यासनके प्रथम वर्षमें सितंबर की २८ तारीख़को विंडसरके मैदानमें सेना-की क़वाइद हुई । मैदान दर्शकोंसे भरगया। पैररखनेकीभी जगह न रही। इससमय रानीने पुरुषोंकीसी सैनिक वरदी पहनकर लोगोंको दर्शन दिये। पुरुषके वेशमें स्त्री का सौंदर्य एक अद्भुतप्रकारका देखपडता है । साडीकी जगह टोपी और गौनके बदले कोट, हाथमें सुंदर सुबुक पंखेके स्थानमें शत्रुका मदमर्दनकरनेवाली किरिचको देखकर बोधहोताथा कि, मानों शृंगाररसने विश्वविजयकेलिये वीरता-के चिह्न धारणकिये हैं ॥

सदाके नियमानुसार रानी विक्टोरियाके शासनमें लार्ड मेयरके गिल्डहालवाले दर्बारका पहला अवसर आया । ९ नवंबरको शुभसमयमें रानीने बकिंगहाम महलसे गिल्डहालको प्रयाणकिया। राजमार्गके दोनों ओर दर्शकोंकी भीड़ लगगई। आप चार घोड़ेकी गाडीमें सवार थीं। श्रीमतीका गौन उठानेका काम सदरलैंडकी डचेज़को दियागया था और एलबिमोरलके अर्ल गाड़ी हांकते थे । श्रीमतीने पीले रंगके वस्त्र पहनरक्खे थे, उनमें रुपहरी तारे चमकते थे और शिरका मुकुट अपनी चमकसे सुंदर केशोंको अधिक चमका रहाथा । सवारी निकलतेही गिर-

जोंमें घंटानाद हुआ । और लोगोंने उच्चस्वरसे "रानी विक्टोरियाका जय" का हर्षनादकर आकाश व्याप्त किया । हाट बाट, ध्वजा पताका और तोरणोंसे सजायागया था । जगह २ रानीका सुंदर चित्र विराजमान था । लोगोंका हर्षनाद सुनतेही रानीने बडे विनीतभाव, हास्यवदन और गंभीर आकृतिसे लोगोंसे सलाम किया । मार्गमें रानीके स्वागत चिह्न देखकर श्रीमती हर्षित थीं । इतनेही में प्रधान सेनाध्यक्ष डयूक् आफ् वेलिंगटनने रानीके सत्कारमें "हुर्रे २" की गर्जना की । टेम्बल बारपर पहुँचतेही नागरिकोंने आपका स्वागत किया । नगरमें प्रवेश करतेही एक एल्डरमैन (पुराध्यक्ष) विचित्रप्रकारपर घोडेसे गिरगया । हँसीसे भीडमें कहकहा मचगया । चपल सवार लोगोंके चंचल चित्तको शांत करनेकेलिये ऐसी फुरतीसे घोड़ेपर फिर चढ़ा कि लोग चकित होगये । हँसीकी जगह सन्नाटा छागया । टेम्बल बारके पास आनेपर लार्ड मेयरने लण्डन नगरकी ओरसे तल्वार भेंटकी । रानीने तल्वार अपने हाथमें लेकर थोडी देरमें लौटादी ।

श्रीमतीकी सवारी बडेठाटके साथ सेंटपालके गिरजेके निकट पहुँची । क्राइस्ट कालेजके विद्यार्थियोंने श्रीमतीका रथ खडाकर आपके अभिनन्दन पत्र दिया । विद्यार्थियोंके मुखसे "ईश्वर रानीकी रक्षा करै" सुनकर रानीने कालेजके प्रिन्सिपालको धन्यवाद दिया । श्रीमतीके गिल्डहालके निकट पहुँचतेही राज-पुरुषोंने स्वागत किया । रानीजी गाड़ीसे उतरकर दर्बारमें गई । सिंहासन पर विराजतेही गीतवाद्य होनेलगे । भोजनारंभ हुआ । कार्माथेन परगनेकी टिवीनदीमेंसे एक लँगडे मल्लाहने सोलोमन नामकी मछली, जिसकी इंग्लैंडमें बडी चाव है भेटके लिये डाकद्वारा भेजी थी और लार्ड मेयरसे निवेदन किया था कि मेरी प्रीतिपूर्वक भेटको श्रीमतीकी टेबलमें स्थान मिलना चाहिये । वही मछली रानीके भोजनमें रक्खी गई । भोजनारंभसे पूर्व सब लोगोंने एक साथ उच्चस्वरसे रानीकी मंगल कामनामें स्वास्थ्यका मद्यपान किया । इस अवसरपर रानीजी एक बात भूल गई । एक व्यक्तिने ऊँचे स्वरसे पुकारकर इस भूलका संशोधन किया । और उसीके कथनानुसार लंडन नगर और लार्ड मेयरकी सलामतीका प्रकाशकर भोजनारंभ कियागया । परंतु नगरकी सलामती-के लिये जो मद्यका प्याला भराथा वह एकाएक टूटगया और उसमेंसे मद्य रानीके शरीरपर गिरगया । लोगोंके मन खिन्न होगये । इस भोजनमें चालीस लाख रुपयेकी रकाबियाँ इकट्ठी हुई थीं । आनन्दपूर्वक भोजन समाप्त हुआ और रात्रिके साढ़ेआठबजे रानी विदा हुई । लार्ड मेयर फाटकतक पहुँचाने गये । श्रीमती उनसे हाथ मिलाकर अभ्यर्थनाकेलिये धन्यवाद दिया । जाते-

समय नगरवासियोंने जैसा सत्कार किया था वैसाही लौटतीबार किया । श्रीमती ने लार्डमेयर तथा सर जान् कोवेनको बेरोनेट, सर् मोजिजमोंटफ़ेर और सर जान केरलको नाइटकी पदवी दी। सर् मोजिज़से पहले किसी यहूदीको उच्च उपाधि नहीं मिलीथी इसकारण इनके पदवी पानेसे लोगोंको निश्चय होगया कि, श्रीमती ईसाई और यहूदियोंका द्वेष मेटना चाहतीहैं ॥

राजकार्यसे छुट्टी पानेपर रानी अपनासमय गान,पुस्तकावलोकन, समाचारपत्र पढ़ने, चित्रकारी करने, घोड़े दौड़ाने और सैर करनेमें बिताती थीं । इटालियन गायनसे श्रीमतीको बडा प्रेम था । चित्रकलामें वह बड़ी प्रवीणा थीं । कभी २ वह अपने संबंधियों और भाई बंधुओंको बुलाकर भोजदिया करती थीं । उससमय उन लोगोंसे कहतीं कि " मैं अभी रानी कहलाने योग्य नहींहूं, क्योंकि मेरी उमर कमहै" इससमय इनकी ऊँचाई पांच फुट दो इंच थी परंतु राजरथपर बैठकर बाहर निकलते समय अच्छी लंबी दिखलाई देतीं थीं ॥

इसी अवसरमें रानी और राजमाताका वध करनेकी धमकी देनेके अपराधमें जर्मनी निवासी 'स्टबर' नामक व्यक्ति पकड़ागया । यह पागल निकला।४नवंबरको जब श्रीमती अपनी मातासहित सेंटजेम्सके बर्डकेज वाक स्थानको गाड़ीपर सवार-होकर जारही थीं दूसरे एक व्यक्तिने गाडीके बराबर आकर घूँसा उठाया और बहुतसी गालियाँ देनेकेसाथ कहा कि 'मैं, तुम और तुम्हारी माको गादीसे उतार दूंगा'। यह कहकर भागाजाता था परंतु तुरंतही पकड़लिया गया । पकड़नेपर विदितहुआ कि, यह जान गुड नामका पागलहै ॥

२० नवंबरको श्रीमतीने प्रथमबार पार्लियामेंट खोली । पार्लियामेंट भवन-में जाते समय मार्गमें रानीका बडा सत्कार हुआ । रानीने लार्ड सभाकी गादी-पर विराजकर लार्ड चैंसलरसे अपना प्रतिज्ञापत्र पढ़वाया । इसकेबाद पार्लियामेंटमें राजकुटुंबके लोगोंके वेतनकी लिस्ट पेश हुई । इसके अनुसार रानीजीको राजकोषमेंसे ३८॥ लाख रुपया देना निश्चय हुआ । इनमेंसे भोजनखर्चके ६ लाख रुपये, घर खर्चके १३१२६००), और कामके लिये १७२५०००) तथा राजमहलकी रक्षाकेलिये १३२०००) नियत हुए । और फुटकर कामोंकेलिये ८०४००) ठहरे । इस प्रस्तावका मिस्टर जोजेफ़ ह्यूमने विरोध किया और कहा कि, इतना खर्च करना उचित नहीं है । परंतु उनका विरोध किसीने न माना । राजमाताके खर्चेमेंभी अस्सी हजार रुपयेकी वृद्धि कीगई ।

अध्याय १२.

राज्याभिषेक ।

रानी विक्टोरियाके सिंहासनारूढ होनेके बाद एकवर्षतक मृतराजाका शोक पालागया । पट्टाभिषेककी तैयारीकेलिये बहुत दिन पहलेसे धूम मच गई । इस शुभ अवसरपर राज्यकर्त्ताका ओष्ठचुंबन करनेकी वहांके उमरावोंमें चाल है । लोगोंका अनुमान था कि इससमयकी राज्यकर्त्री स्त्री है इसलिये यह नियम उठादिया जायगा परंतु यह रीति ज्यों की त्यों बनी रही । इसकार्यमें रानीके चाचा और अन्य सर्दारों की गिनती छःसौके लगभग पहुँचनेवाली थी । इस क्रियामें रानीके शिरको हाथसे छूना और उनके गालका चुंबन करनाही कार्य था । परंतु अधिक लोगोंने इस कार्यको न किया । रानीका प्रथम सिक्का जिसमें रानी विक्टोरियाका चित्र था १४ जुलाईको प्रथमबार ढालागया । और राजा चौथे विलियमका राजमुकुट बहुत भारी था इसलिये उसे तोडकर नये शिरसे बनाया गया । इस मुकुटमें १ विशाल हीरा, १ बडा नीलम, १६ छोटे नीलम ११ पन्ने १२४६ पुखराज १४७ चपटेमणि ४ मोती बडे और २३ छोटे मोती जडेगये । राजा पंचम हेनरीने एजिनकोर्टके रणक्षेत्रमें एक बडा हीरा प्राप्त किया था । वही इसके बीचमें लगाया गया । राजाका मुकुट ७ सेरका था किन्तु इसका बोझा केवल तीनसेर हुआ । इस मुकुटके बनवानेमें कुल १ करोड १२ लाख ७६ हजार रुपया व्यय हुआ । यह रंडलबिज नाम जौहरी की मार्फत बनायागया था । उन्होंने तैयार करनेबाद जब इसका प्रदर्शन किया तब दर्शकोंकी बड़ी भीड़ इकट्ठी होगई थी । इस मुकुटकी प्रशंसामें राजकवियोंने काव्य निर्माण किये थे और इस उत्सवपर विशेष प्रकार से पदक राज्यकी ओरसे बाँटे गये थे ।

महारानीका राज्याभिषेक ।



इंग्लैंड राज्यका सिंहासन ।

